वर्ष-1 , अंक-7 | बेंगलुरु, मंगलवार , 25 अगस्त 2026 | RNI NO:KNHIN/26/A5540 | Contact:news@bhaarataarth.com | पृष्ठ - 4 ,मूल्य - 5 रुपए

दैनिक समाचार पत्र
भारतार्थ खबर
ख़बर नहीं, उसका अर्थ

देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया

शरीर और मन के तल पर जीवन
ऊपर उठें... चेतना की ओर
आत्मा
आत्मा के तल पर जीवन
हमें शरीर के तल पर नहीं, मन के तल पर नहीं,
हमेशा आत्मा के तल पर जीना चाहिए।

आरक्षण के खिलाफ दिल्ली-लखनऊ में प्रदर्शन

NOT FOR FAVORS, WE WANT DIALOGUE
NOT FOR MERCY, WE WANT EQUAL OPPORTUNITY
NOT FOR DIVISION, WE WANT UNITY
NOT FOR POWER, WE WANT JUSTICE
RESERVATION HATAO ANDOLAN
MASS JAN-JAGARAN
EQUAL RESPECT
EQUAL RIGHTS
EQUAL OPPORTUNITY

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 24 अगस्त 2026। आरक्षण व्यवस्था में बदलाव की मांग को लेकर रविवार को दिल्ली और लखनऊ में प्रदर्शन हुए। प्रदर्शनकारियों ने मौजूदा आरक्षण नीति के साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के प्रस्तावित इक्विटी रेगुलेशन 2026 और रोस्टर प्रणाली में बदलाव की मांग उठाई। दिल्ली में बिना अनुमति प्रदर्शन करने के आरोप में पुलिस ने कई लोगों को हिरासत में लिया। कनॉट प्लेस में जुटे प्रदर्शनकारी

दिल्ली में बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी कनॉट प्लेस पहुंचे। पुलिस के अनुसार, राजधानी में संबंधित प्रदर्शन के लिए अनुमति नहीं दी गई थी। इसके बावजूद लोगों के जुटने पर पुलिस ने कई प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लेकर मौके से हटाया और बाद में छोड़ दिया। कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए क्षेत्र में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया।

पुलिस ने पहले ही शाह ऑडिटोरियम, कनॉट प्लेस समेत अन्य सार्वजनिक स्थानों पर बिना अनुमति प्रदर्शन या जमावड़ा नहीं करने की अपील की थी। जंतर-मंतर की ओर पहुंच रहे कुछ युवाओं को भी पुलिस ने वहां एकत्र होने से रोक दिया। सोशल मीडिया अभियान के बाद जुटी भीड़

प्रदर्शनकारियों के दिल्ली पहुंचने के पीछे सोशल मीडिया पर चलाए गए अभियानों को प्रमुख वजह बताया जा रहा है। आयोजकों और समर्थकों की ओर से ह्यचलो दिल्लीह्ल तथा ह्यसीपी मार्चह्ल जैसे ऑनलाइन अभियान चलाए गए थे। सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों से दिल्ली पहुंचकर प्रदर्शन में शामिल होने की अपील की गई।

लखनऊ में भी विरोध प्रदर्शन

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में भी आरक्षण, वऋछ के नियमों और एससी-एसटी एक्ट समेत विभिन्न मुद्दों को लेकर सवर्ण मोर्चा के कार्यकताओं ने प्रदर्शन किया। गोमतीनगर स्थित 1090 चौराहे पर प्रदर्शनकारियों ने करीब आधे घंटे तक नारेबाजी की। इसके बाद प्रदर्शनकारी बैकुंठ धाम श्मशान घाट की ओर रवाना हुए, जहां उन्होंने सवर्ण सांसदों और विधायकों की प्रतीकात्मक शवयात्रा निकाली। प्रदर्शन में ह्यसंवैधानिक अछूतह्ल लिखी तख्तियां भी दिखाई गईं। प्रदर्शनकारियों ने वऋछ के इक्विटी रेगुलेशन 2026 को वापस लेने की मांग की।

मायावती ने आर्थिक आधार पर आरक्षण की मांग पर जताई असहमति

आरक्षण को लेकर चल रहे विवाद के बीच बहुजन समाज पार्टी प्रमुख मायावती ने आर्थिक आधार पर आरक्षण देने की मांग पर असहमति जताई। उन्होंने सोशल मीडिया मंच ह्यएक्सह्ल पर कहा कि आरक्षण के विरोध में जुटे लोगों की ओर से आर्थिक स्थिति के आधार पर आरक्षण लागू करने की मांग उठाई जा रही है, जिसे वह उचित नहीं मानतीं। वहीं, उत्तर प्रदेश के पंचायती राज मंत्री एवं सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी प्रमुख ओमप्रकाश राजभर ने आरक्षण समाप्त किए जाने की संभावना को खारिज किया। चित्रकूट में महाराजा दक्ष प्रजापति जयंती कार्यक्रम के दौरान उन्होंने कहा कि आरक्षण समाप्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि डॉ. भीमराव आंबेडकर ने वंचित वर्गों को सामाजिक मुख्यधारा से जोड़ने के उद्देश्य से आरक्षण की व्यवस्था की थी।

दिल्ली और लखनऊ में हुए प्रदर्शनों के बाद आरक्षण नीति, सामाजिक न्याय और वऋछ के नए नियमों को लेकर राजनीतिक एवं सामाजिक बहस एक बार फिर तेज होती दिखाई दे रही है।

गिनी में कचरे का पहाड़ ढहा, 22 की मौत

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

कोनाक्री, 24 अगस्त 2026। पश्चिमी अफ्रीकी देश गिनी की राजधानी कोनाक्री में रविवार तड़के भारी बारिश के बाद कचरे के विशाल ढेर का हिस्सा ढहने से बड़ा हादसा हो गया। हादसे में कम से कम 22 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है, जबकि मलबे में दबे अन्य लोगों की तलाश के लिए बड़े पैमाने पर बचाव अभियान जारी है।

हादसा कोनाक्री के दार ए सलाम इलाके में स्थित शहर के बड़े लैंडफिल में हुआ। भारी बारिश के बाद कचरे के पहाड़ में भूस्खलन हुआ और मलबा आसपास बनी झुग्गियों पर जा गिरा। कई झुग्गियां मलबे में दब गईं।

रात करीब तीन बजे हुआ हादसा

स्थानीय जानकारी के अनुसार, रविवार सुबह करीब तीन बजे क्षेत्र में तेज बारिश शुरू हुई। बारिश के कारण कचरे के ढेर का एक बड़ा हिस्सा अस्थिर होकर नीचे की ओर खिसक गया। इसके चलते आसपास रहने वाले लोगों को संभलने का पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाया।

हादसे के तुरंत बाद नागरिक सुरक्षा कर्मियों और बचाव दलों ने मलबे में फंसे लोगों की तलाश शुरू कर दी। राहत एवं बचाव अभियान के दौरान जीवित बचे लोगों को सुरक्षित निकालने और संभावित रूप से दबे लोगों तक पहुंचने का प्रयास किया जा रहा है।

हादसे के दिन बंद होनी थी लैंडफिल साइट

सैन्य इंजीनियरिंग बटालियन के स्वच्छता अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल बाल्डे ममादु बैलो के अनुसार, दार ए सलाम स्थित कचरा डंपिंग साइट को रविवार को ही बंद किया जाना निर्धारित था।

प्रशासन ने आसपास रहने वाले लोगों को पहले ही क्षेत्र खाली करने का नोटिस दिया था। इसके बाद कुछ परिवार वहां से दूसरी जगह चले गए थे, लेकिन हादसे के समय भी काफी संख्या में लोग क्षेत्र में मौजूद थे। परिवारों को सुरक्षित स्थान पर बसाने का आश्वासन

घटनास्थल का दौरा करने पहुंचे क्षेत्रीय प्रशासन और विकेंद्रीकरण मंत्री दीनाबोउ तौरे ने हादसे पर दुख जताया। उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास होगा कि प्रभावित और बचे हुए परिवारों को जल्द से जल्द सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित किया जाए। फिलहाल राहत एवं बचाव दल मलबे में संभावित रूप से फंसे लोगों की तलाश कर रहे हैं। मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका से भी इनकार नहीं किया जा रहा है। हादसे के कारणों और प्रभावित परिवारों की वास्तविक संख्या को लेकर प्रशासन की विस्तृत जानकारी का इंतजार है।

बंगाल की खाड़ी में सिस्टम सक्रिय, कई राज्यों में भारी बारिश

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 24 अगस्त 2026। बंगाल की खाड़ी में बने निम्न दबाव क्षेत्र के कारण देश के कई हिस्सों में मानसूनी गतिविधियां तेज होने की संभावना है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार, 23 अगस्त की शाम यह निम्न दबाव क्षेत्र उत्तर तटीय ओडिशा और उससे सटे गंगीय पश्चिम बंगाल तथा उत्तर-पश्चिमी बंगाल की खाड़ी के ऊपर स्थित था। इसके अगले 24 घंटे में लगभग उत्तर-पश्चिम दिशा में बढ़ने का अनुमान है।

इस मौसम प्रणाली के प्रभाव से ओडिशा, पश्चिम बंगाल, झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश समेत कई राज्यों में भारी से बहुत भारी बारिश के दौर की संभावना बनी हुई है। क्टऊके पूवार्नुमान के मुताबिक मौसम प्रणाली के आगे बढ़ने के साथ पूर्वी और मध्य भारत के कुछ हिस्सों में बारिश की गतिविधियां बढ़ सकती हैं। ओडिशा और पश्चिम बंगाल पर खास

नजर बंगाल की खाड़ी में सक्रिय निम्न दबाव क्षेत्र के कारण ओडिशा और पश्चिम बंगाल में मौसम पर विशेष नजर रखी जा रही है। क्टऊके समुद्री क्षेत्र बुलेटिन के अनुसार, सिस्टम के उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ने की संभावना है। ओडिशा में कुछ स्थानों पर भारी से बहुत भारी बारिश की संभावना है। पश्चिम बंगाल और झारखंड के भी कई इलाकों में तेज बारिश का दौर देखने को मिल सकता है। ऐसे में निचले इलाकों में जलभराव और स्थानीय स्तर पर यातायात प्रभावित होने की स्थिति बन सकती है। पूर्वी यूपी और मध्य प्रदेश में भी बारिश

मौसम प्रणाली के प्रभाव से पूर्वी मध्य प्रदेश और पूर्वी उत्तर प्रदेश में भी बारिश की गतिविधियां जारी रहने का अनुमान है। क्टऊ के राष्ट्रीय मौसम पूवार्नुमान में देश के विभिन्न हिस्सों में भारी बारिश की संभावनाओं को लेकर चेतावनी जारी की गई है। मध्य भारत में बारिश के साथ स्थानीय स्तर पर गरज-चमक और तेज हवाओं की स्थिति भी बन सकती है। लोगों को मौसम विभाग के स्थानीय पूवार्नुमान और चेतावनियों पर नजर रखने की सलाह दी जाती है।

बिहार-झारखंड में भी अलर्ट बिहार और झारखंड के कई हिस्सों में भारी बारिश की संभावना के बीच बिजली चमकने और गरज-चमक वाली गतिविधियों का खतरा भी बना रह सकता है। ऐसे मौसम में खुले स्थानों पर अनावश्यक रूप से जाने से बचना और स्थानीय प्रशासन की सलाह का पालन करना जरूरी है।

हिमाचल, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर में बारिश उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में भी मानसून सक्रिय रहने का अनुमान है। हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर-लद्दाख क्षेत्र में कई स्थानों पर बारिश की संभावना जताई गई है। क्टऊके 23 अगस्त के राष्ट्रीय मौसम बुलेटिन में हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर-लद्दाख क्षेत्र में व्यापक बारिश की संभावना दर्ज की गई है।

उत्तराखंड में भी बारिश के साथ गरज-चमक और बिजली गिरने जैसी मौसमी घटनाओं को लेकर सावधानी जरूरी है। पहाड़ी क्षेत्रों में लगातार बारिश के दौरान भूस्खलन और अचानक जलभराव जैसी स्थानीय परिस्थितियां भी बन सकती हैं। अल नीनो से ज्यादा अहम फिलहाल मानसूनी सिस्टम वैश्विक स्तर पर अल नीनो को लेकर मौसम वैज्ञानिकों के बीच चर्चा जारी है, लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में भारत के लिए तत्काल मौसम पर बंगाल की खाड़ी में बना निम्न दबाव क्षेत्र और सक्रिय मानसूनी प्रणालियां अधिक महत्वपूर्ण हैं। इसलिए आने वाले दिनों में बारिश का आकलन स्थानीय मौसम प्रणालियों और क्टऊके ताजा पूवार्नुमानों के आधार पर करना अधिक उचित होगा।

मेडिकल डिवाइस नियम बदले, लाइसेंस का बोझ घटा

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

नई दिल्ली। 24 अगस्त 2026। केंद्र सरकार ने चिकित्सा उपकरण क्षेत्र में कारोबारी सुगमता बढ़ाने के लिए मेडिकल डिवाइस नियमावली, 2017 में महत्वपूर्ण संशोधन किए हैं। सरकार के अनुसार इन बदलावों का उद्देश्य नियामकीय प्रक्रिया को सरल बनाना, अनुपालन का बोझ कम करना और उन्नत चिकित्सा उपकरणों की भारत में उपलब्धता तेज करना है।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के मुताबिक, संशोधित प्रावधानों के तहत ऐसे चिकित्सा उपकरण निमार्ताओं को आउटसोर्स स्टरलाइजेशन के लिए अलग ऋण लाइसेंस लेने की जरूरत नहीं होगी, जो अपने उत्पादों का स्टरलाइजेशन पहले से वैध लाइसेंस प्राप्त किसी अन्य सुविधा में कराते हैं।

दोहराव वाली लाइसेंस प्रक्रिया से राहत

नए प्रावधान से उन निमार्ताओं को विशेष राहत मिलने की उम्मीद है, जिनके पास अपनी स्टरलाइजेशन सुविधा नहीं है। सरकार का मानना है कि अलग लाइसेंस की आवश्यकता समाप्त होने से दोहराव वाली नियामकीय प्रक्रिया, प्रशासनिक कार्यवाही, अनुपालन लागत और प्रक्रिया में लगने वाला समय कम होगा। आउटसोर्स स्टरलाइजेशन में चिकित्सा उपकरणों अथवा संबंधित सामग्रियों को संक्रमण और रोगाणुओं से मुक्त करने के लिए लाइसेंस प्राप्त बाहरी सुविधा की सेवाएं ली जाती हैं।

CBSE पर शिक्षा मंत्री की बैठक, परीक्षा व्यवस्था पर जोर

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली। 24 अगस्त 2026। केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रह्लाद जोशी ने सोमवार को शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय बैठक कर केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (उइरए) से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों की समीक्षा की। बैठक में सीबीएसई की शैक्षणिक व्यवस्था, परीक्षा प्रणाली और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को अधिक प्रभावी बनाने से जुड़े विषयों पर चर्चा हुई। अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श के दौरान बोर्ड की कार्यप्रणाली में दक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने पर विशेष जोर दिया गया। विद्यार्थी और शिक्षक प्राथमिकता में बैठक में विद्यार्थियों और शिक्षकों को बेहतर सहायता उपलब्ध कराने के उपायों की भी समीक्षा की गई। शैक्षणिक प्रक्रियाओं को सरल और प्रभावी बनाने के साथ परीक्षा व्यवस्था को अधिक सुचारु एवं भरोसेमंद बनाने पर चर्चा हुई। परीक्षा संबंधी कार्यों में बेहतर प्रबंधन, स्पष्ट प्रक्रियाओं और विद्यार्थियों के हितों को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर भी अधिकारियों के साथ विचार किया गया।

प्रशासनिक व्यवस्था मजबूत करने पर जोर

सीबीएसई की प्रशासनिक कार्यप्रणाली को अधिक प्रभावी और व्यवस्थित बनाने तथा विभिन्न प्रक्रियाओं को सरल करने के उपायों पर भी बैठक में चर्चा हुई। सरकार का उद्देश्य बोर्ड से जुड़े विद्यार्थियों, शिक्षकों और अन्य हितधारकों को बेहतर एवं समयबद्ध सेवाएं उपलब्ध कराना है।

सीबीएसई की ओर से हाल के दिनों में परीक्षा परिणाम, पूरक परीक्षाओं और शैक्षणिक संसाधनों से संबंधित कई महत्वपूर्ण सूचनाएं जारी की गई हैं। बोर्ड की वेबसाइट पर अगस्त में कक्षा 12 की पूरक परीक्षा के परिणाम सहित विभिन्न परीक्षाओं से जुड़ी जानकारियां उपलब्ध कराई गई हैं।

शिक्षा क्षेत्र की लगातार समीक्षा

शिक्षा मंत्री प्रह्लाद जोशी द्वारा मंत्रालय का कार्यभार संभालने के बाद विभिन्न विभागों और संस्थानों की समीक्षा बैठकें की जा रही हैं। इससे पहले उन्होंने राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (ठळअ) से जुड़े विषयों तथा शिक्षा क्षेत्र की अन्य प्राथमिकताओं पर भी वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चर्चा की थी। सरकार का जोर अब सीबीएसई की शैक्षणिक, परीक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने पर है।

फर्जी CBI अफसर बनकर छापेमारी, 7 गिरफ्तार

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

नई दिल्ली। 24 अगस्त 2026। दिल्ली के रोहिणी जिले में खुद को उइक और अन्य सरकारी जांच एजेंसियों का अधिकारी बताकर कथित तौर पर फर्जी छापेमारी और ठगी करने वाले गिरोह का पुलिस ने खुलासा किया है। प्रशांत विहार थाना पुलिस ने मामले में सात आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार, आरोपियों के पास से फर्जी पहचान-पत्रों के स्क्रीनशॉट, सरकारी अधिकारियों जैसी वेशभूषा में तस्वीरें और वीडियो सहित कई डिजिटल साक्ष्य मिले हैं। रोहिणी के डीसीपी शशांक जायसवाल के मुताबिक, आरोपियों का कथित तरीका फिल्मी अंदाज का था। गिरोह पहले ऐसे लोगों की जानकारी जुटाता था, जिनके पास नकदी या कीमती सामान होने की संभावना रहती थी। इसके बाद कथित आरोपी उइक अधिकारी बनकर संबंधित व्यक्ति के घर या ठिकाने पर पहुंचते और फर्जी पहचान-पत्र दिखाकर रेड या तलाशी की धमकी देते थे। पुलिस को आशंका है कि डर का माहौल बनाकर रकम या कीमती सामान हासिल करना गिरोह का मुख्य उद्देश्य था।

पहले जुटाते थे टारगेट की जानकारी

पुलिस जांच में कुलदीप शर्मा की कथित भूमिका शिकायतकर्ता, उसके पते तथा घर में नकदी या कीमती सामान होने की संभावित जानकारी उपलब्ध कराने में सामने आई है। जांच के अनुसार, इसके बाद आसिफा और पूजा अग्रवाल ने कथित फर्जी रेड की योजना बनाई। पूजा ने अपने बहनोई चंदर प्रकाश शर्मा से संपर्क कर छापेमारी के लिए लोगों को जुटाने को कहा। पुलिस के मुताबिक, इसके बाद चंदर प्रकाश कथित रूप से बबलू, दो सिख व्यक्तियों और अन्य लोगों के साथ मौके पर पहुंचा। इन सभी की भूमिका और मामले से जुड़े अन्य पहलुओं की जांच अभी जारी है। उइकके मोनोग्राम वाले कपड़े बरामद पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से उइकका मोनोग्राम लगे कपड़े बरामद किए हैं। आठ मोबाइल फोन की जांच के दौरान कथित फर्जी उइकपहचान-पत्रों के स्क्रीनशॉट तथा सरकारी अधिकारियों के रूप में तैयार किए गए फोटो और वीडियो भी मिले हैं। जांच एजेंसियां इन डिजिटल साक्ष्यों के आधार पर यह पता लगाने में जुटी हैं कि क्या गिरोह के सदस्यों ने दिल्ली और मुंबई में भी उइक, प्रवर्तन निदेशालय (एऊ) अथवा अन्य सरकारी एजेंसियों के अधिकारी बनकर ऐसी कथित वारदातें की थीं। तीन से चार महीने से सक्रिय होने का संदेह

पुलिस के अनुसार, प्रारंभिक जांच में आरोपियों के पिछले करीब तीन से चार महीने से ऐसी गतिविधियों में शामिल होने का संदेह सामने आया है। अब पुलिस यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि गिरोह ने अब तक कितने लोगों को निशाना बनाया और कितनी कथित वारदातों को अंजाम दिया। जांच में उउळश फुटेज, कॉल डिटेल रिकॉर्ड, मोबाइल फोन से मिले डिजिटल साक्ष्य और तकनीकी निगरानी को आधार बनाया जा रहा है। पुलिस गिरोह से जुड़े अन्य संभावित लोगों की भूमिका की भी जांच कर रही है।

फुटपाथ पर पैदल चलना मौलिक अधिकार: सुप्रीम कोर्ट

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली। 24 अगस्त 2026। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को पैदल यात्रियों की सुरक्षा और फुटपाथों की उपलब्धता को लेकर सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से जवाब मांगा। अदालत ने कहा कि फुटपाथ लोगों के जीवन का अहम हिस्सा हैं और पैदल चलने वालों के लिए सुरक्षित तथा अतिक्रमण-मुक्त स्थान सुनिश्चित किया जाना जरूरी है। जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस आलोक अराधे की पीठ ने सड़क किनारे व्यवस्थित फुटपाथ और पैदल यात्रियों के लिए निर्धारित स्थान उपलब्ध कराने से जुड़े निर्देशों के अनुपालन की स्थिति पर राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से रिपोर्ट मांगी है।

पैदल यात्रियों के लिए सुरक्षित जगह जरूरी

केंद्र की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (अरत्र्ह्) केएम नटराज ने अदालत को बताया कि सड़कें राज्य का विषय हैं। उन्होंने यह भी बताया कि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (टङ्गफ्छळ) तथा आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय (टङ्गल्वअ) ने अदालत के निर्देशों के अनुपालन में राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (ठऌअक) को पैदल यात्रियों के लिए निर्धारित और उचित स्थान उपलब्ध कराने संबंधी सलाह जारी की है।

पीठ ने संबंधित राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से इन मंत्रालयों की ओर से जारी सलाह पर अपनी स्थिति स्पष्ट करने को कहा। अदालत ने जोर दिया कि पैदल यात्रियों के लिए सड़क पर सुरक्षित और स्पष्ट रूप से चिह्नित स्थान होना चाहिए।

फुटपाथ पर चलने का अधिकार मौलिक अधिकार का हिस्सा

सुप्रीम कोर्ट ने 19 जून को दिए एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा था कि निर्धारित फुटपाथ पर सुरक्षित रूप से चलने का अधिकार मौलिक अधिकारों के दायरे में आता है। अदालत के अनुसार, पैदल चलने का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 19(1)(f) के तहत नागरिकों को मिले आवागमन के अधिकार और अनुच्छेद 21 के तहत जीवन एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार से जुड़ा है।

शीर्ष अदालत ने कहा था कि निर्धारित फुटपाथ पर पैदल चलने वालों के अधिकार को मोटर वाहनों की आवाजाही पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए। अदालत के अनुसार, सुरक्षित रूप से चलने के अधिकार में नागरिकों के लिए निर्धारित फुटपाथ का अधिकार भी शामिल है।

सड़क सुरक्षा में पैदल यात्रियों को प्राथमिकता

सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी सड़क दुर्घटना से जुड़े मुआवजे के मामले की सुनवाई के दौरान सामने आई थी। मामले में एक पिता ने अपने पांच वर्षीय बेटे को स्कूल ले जाते समय सड़क दुर्घटना में खो दिया था।

शीर्ष अदालत ने अपने फैसले में पैदल यात्रियों की सुरक्षा को सड़क व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा बताते हुए कहा था कि सार्वजनिक सड़कों की योजना और उपयोग में पैदल चलने वाले नागरिकों के अधिकारों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अब सोमवार की सुनवाई में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से अनुपालन रिपोर्ट मांगे जाने के बाद यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि फुटपाथों को अतिक्रमण से मुक्त रखने, उन्हें स्पष्ट रूप से चिह्नित करने और पैदल यात्रियों के लिए सुरक्षित मार्ग उपलब्ध कराने के संबंध में जमीनी स्तर पर क्या कदम उठाए जाते हैं।

वंदे मातरम पर भाजपा अध्यक्ष का विपक्ष पर हमला

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली। 24 अगस्त 2026। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने सोमवार को विपक्षी दलों पर समाज को बांटने वाली सोच के साथ काम करने और राष्ट्रगीत ह्यवंदे मातरम्ह्ल का कथित रूप से अपमान करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि देश की जनता ऐसी सोच का जवाब देगी और समय के साथ विरोधियों की सोच बदलने में भारत की मिट्टी की ताकत निर्णायक साबित होगी। नितिन नवीन नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में संत गुरु रविदास की 650वीं जयंती के अवसर पर आयोजित ह्यसमरसता संकल्प दिवसह्ल कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति और विरासत को लंबे समय से विभिन्न

भारतीय जनता पार्टी
राष्ट्रीय पदाधिकारी बैठक
22 अगस्त 2026

चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, लेकिन इसकी जड़ें मजबूत हैं और देश की सांस्कृतिक शक्ति हर चुनौती का सामना करने में सक्षम है।

संस्कृति की मजबूती का किया उल्लेख

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि भारत पर लंबे समय तक बाहरी शक्तियों का शासन रहा, लेकिन वे देश की सांस्कृतिक नींव को समाप्त नहीं कर सके। उन्होंने आरोप लगाया कि वर्तमान समय में भी कुछ लोग समाज में विभाजन की सोच को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं। नवीन ने ह्यवंदे मातरम्ह्ल को भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा महत्वपूर्ण राष्ट्रभक्ति गीत बताते हुए कहा कि इस गीत ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लोगों में देशभक्ति की भावना को मजबूत किया और अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरण भारत की जनता देगी जवाब

भाजपा अध्यक्ष ने अपने संबोधन में कहा कि भारत की मिट्टी में ऐसी शक्ति है।

संपादकीय

भूजल की भयावह परिस्थिति

देश के भूजल में आर्सेनिक और क्रोमियम से जुड़े स्वास्थ्य जोखिम का उजागर होना बेहद डरावना और चिंतित करने वाला है। यह खुलासा हाल ही में प्रकाशित इंडियन मेडिकल जर्नल के तथ्यों से हुआ है। इस पत्रिका के विश्लेषण में आर्सेनिक से कैंसर का जोखिम सबसे बड़ी चिंता के तौर पर उभरा है। आर्सेनिक वाले पानी के सेवन से 49 फीसदी वयस्कों और 60 फीसदी बच्चों में संभावित गैर-कैंसर वाले स्वास्थ्य के दूसरे जोखिम की आशंका जताई गई है। बच्चों में दूषित पानी के त्वचा से संपर्क से भी खतरा सामने आया है। कैंसर के जोखिम के आंकलन में आर्सेनिक के संपर्क से जुड़े 72 फीसदी वयस्क और 69 फीसदी बच्चों के अध्ययनों में पानी के जरिए जोखिम तय सीमा से अधिक पाया गया है। क्रोमियम के मामले में यह आंकड़ा वयस्कों में 50 फीसदी और बच्चों में 56 फीसदी रहा। चिंतित करने वाला तथ्य यह भी है कि सतही पानी की तुलना में भूजल में गैर-कैंसरकारी स्वास्थ्य जोखिम ज्यादा पाया गया है। देश के राज्यों की बात करें तो पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, बिहार और जम्मू-कश्मीर समेत कई क्षेत्रों में आर्सेनिक को लेकर जोखिम बढ़ा है। पंजाब के तो कई जिलों में आर्सेनिक से दूषित भूजल से कैंसर का जोखिम तय सीमा से अधिक है। गौर करें तो यह पहली बार नहीं है जब दूषित भूजल को लेकर उपजने वाले खतरों के संबंध में खुलासा हुआ है। गत वर्ष श्भारतीय मानक ब्यूरोश (बीआईएस) द्वारा जारी रिपोर्ट में दिल्ली के पेयजल की गुणवत्ता देश में सबसे निचले स्तर पर होने का खुलासा किया गया था। रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली के पेयजल के नमूने 19 मानदंडों में से किसी पर खरे नहीं पाए गए थे। देश के अधिकांश राज्यों की भी स्थिति कमोवेश ऐसी ही है। अमेरिका के ड्यूक विश्वविद्यालय के शोधकताओं द्वारा दावा किया जा चुका है कि भारत के भूजल में हानिकारक यूरेनियम की मात्रा विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मानकों से अधिक है। यह शोध जर्नल एनवायरमेंटल साइंस एंड टेक्नालॉजी लेटर्स में प्रकाशित हुआ था जिसमें भारत के 16 राज्यों के भूजल में खतरनाक स्तर पर यूरेनियम होने का दावा किया गया था। डब्ल्यूएचओ ने भारत के लिए प्रति लीटर पेयजल में 30 माइक्रोग्राम यूरेनियम की मात्रा को सुरक्षित माना है, जबकि भारत के भूजल में यूरेनियम की मात्रा बहुत अधिक है। गत वर्ष ही विज्ञान पत्रिका नेचर जियो साइंस द्वारा भी खुलासा किया जा चुका है कि सिंधु और गंगा नदी के मैदानी क्षेत्र का तकरीबन 60 फीसद भूजल दूषित हो चुका है। हालत यह है कि कहीं भूजल सीमा से अधिक खारा हो चुका है तो कहीं उसमें आर्सेनिक की मात्रा खतरनाक स्तर पर पहुंच गयी है। आंकड़ों में कहा गया है कि 200 मीटर की गहराई पर मौजूद भूजल का बड़ा हिस्सा दूषित हो चुका है वहीं 23 फीसद भूजल अत्यधिक खारा हो चुका है। 37 फीसद भूजल में आर्सेनिक की मात्रा खतरनाक स्तर तक पहुंच गयी है। आर्सेनिक एक जहरीला तत्व होता है जो प्राकृतिक रूप से भूजल में पाया जाता है, लेकिन अत्यधिक खनन और फर्टिलाइजर के इस्तेमाल के कारण इसकी मात्रा लगातार बढ़ रही है। इसके उपयोग से डायरिया, उल्टी, खून वाली उल्टियां, पेशाब में खून आना, बाल गिरना और पेट दर्द जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही इससे फेफड़े, त्वचा, किडनी और लिवर प्रभावित होते हैं। दूषित भूजल में खतरनाक रोग उत्पन करने वाले जीव पाए जाते हैं जो स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करते हैं। इसमें पाए जाने वाले विषाणु पीलिया, पोलियो, गैस्ट्रोइंटराइटिस और चेचक जैसे रोगों को जन्म देते हैं वहीं जीवाणुओं द्वारा अतिसार, पेचिस, मियादी बुखार, हैजा, सूजाक व क्षयरोग उत्पन होते हैं। आर्सेनिक के अलावा दूषित भूजल में कैडमियम, लेड, मरकरी, निकल तथा सिल्वर की मात्रा भी बढ़ जाती है जो सेहत के लिए बेहद खतरनाक साबित होता है। दूषित भूजल में लोहा, मैंगनीज, कैल्सियम, बेरियम, बोरान एवं अन्य लवणों जैसे नाइट्रेट, सल्फेट, बोरेट और कार्बोनेट इत्यादि की अधिकता भी मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। एक आंकड़े के मुताबिक हर आठ सेकेंड में एक बच्चा दूषित भूजल के सेवन से जीवन खो रहा है। हर साल पचास लाख से अधिक लोग दूषित भूजल के सेवन से मौत के मुंह में जा रहे हैं। यह समझना होगा कि भूजल जलापूर्ति का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जिसका उचित उपयोग और संरक्षण होना चाहिए। भूजल पीने के पानी के अलावा पृथ्वी में नमी बनाए रखने में भी मददगार साबित होता है। पृथ्वी पर उगने वाली वनस्पति तथा फसलों का पोषण भी इसी जल से होता है। यहां यह भी जानना जरूरी है कि अन्य देशों की तुलना में भारत में सालाना मीठे व स्वच्छ पानी की खपत अधिक होती है। विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, घरेलू, कृषि एवं औद्योगिक उपयोग के लिए प्रतिवर्ष 761 बिलियन घनमीटर जल का इस्तेमाल होता है। मौजूदा समय में पानी की कमी बढ़ गयी है। गिरता भूजल सिर्फ महाराष्ट्र के मराठवाड़ा, उत्तरप्रदेश के बुंदेलखंड या बिहार के सीतामढ़ी तक ही सीमित नहीं है। पंजाब व हरियाणा जैसे राज्यों में भूजल स्तर 70 फीसद तक नीचे पहुंच चुका है। विगत वर्षों के आंकड़ों के मुताबिक भारत के 29 फीसद विकासखंड भूजल के दयनीय स्तर पर हैं। हालांकि देश में जल-संरक्षण तथा प्रबंधन कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए समय-समय पर अनेक उपाय किए गए हैं।

शरीर से आत्मा तक: मनुष्य आखिर किस स्तर पर जी रहा है?

संपादकीय` लेखकः अशोक कुमार सिंह रिपोर्टर/मल्टीमीडिया डायरेक्टर भारतार्थ खबर (बंगलुरु कर्नाटक)

मनुष्य का पूरा जीवन एक प्रश्न के आसपास घूमता है–मैं कौन हूं? क्या मैं केवल यह शरीर हूं, जो जन्म लेता है, बढ़ता है, बूढ़ा होता है और एक दिन समाप्त हो जाता है? क्या मैं केवल यह मन हूं, जिसमें हर क्षण विचार, इच्छाएं, भय, क्रोध, प्रसन्नता और दुख आते-जाते रहते हैं? या इन सबके पीछे कोई ऐसी चेतना भी है, जो शरीर और मन दोनों को देखती है?

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा सदियों से मनुष्य को इसी प्रश्न पर विचार करने के लिए प्रेरित करती रही है। इसका एक महत्वपूर्ण संदेश है कि मनुष्य को केवल शरीर के स्तर पर नहीं जीना चाहिए और न ही अपने अस्तित्व को केवल मन के उतार-चढ़ाव तक सीमित कर देना चाहिए। जीवन की गहराई को समझने के लिए चेतना अथवा आत्मबोध के स्तर तक पहुंचने का प्रयास आवश्यक है।

यह विचार शरीर को नकारने का संदेश नहीं देता। शरीर जीवन का महत्वपूर्ण साधन है। इसकी देखभाल करना हमारा कर्तव्य है। इसी प्रकार मन भी जीवन का आवश्यक हिस्सा है। लेकिन समस्या तब शुरू होती है, जब मनुष्य शरीर को ही अपना संपूर्ण अस्तित्व मान लेता है और मन में उठने वाले प्रत्येक विचार को अपना अंतिम सत्य समझने लगता है।

शरीर जरूरी है, लेकिन शरीर ही सब कुछ नहीं। हमारा शरीर प्रकृति का अद्भुत उपहार है। इसी शरीर के माध्यम से हम संसार को देखते हैं, सुनते हैं, अनुभव करते हैं, कार्य करते हैं और अपने संबंध निभाते हैं। इसलिए शरीर की उपेक्षा करना आध्यात्मिकता नहीं हो सकती।

लेकिन शरीर की देखभाल और शरीर के प्रति अत्यधिक आसक्ति में बहुत अंतर है। शरीर स्वस्थ रहे, स्वच्छ रहे और सक्षम रहे–यह आवश्यक है। लेकिन जब मनुष्य अपने पूरे जीवन का मूल्यांकन केवल अपने रूप, रंग, शक्ति, उम्र, सुंदरता और बाहरी आकर्षण के आधार पर करने लगता है, तब वह शरीर के स्तर पर बंधने लगता है।

आज का समाज इस समस्या को बहुत स्पष्ट रूप से दिखाता है। युवा दिखने की इच्छा, सुंदर दिखाई देने की चिंता, दूसरों से बेहतर दिखने की प्रतिस्पर्धा और सामाजिक स्वीकृति पाने की लगातार कोशिश मनुष्य को भीतर से बेचैन कर सकती है।

जिस शरीर पर मनुष्य इतना गर्व करता है, वही शरीर समय के साथ बदलता रहता है। बचपन का शरीर युवावस्था में बदलता है। युवावस्था का शरीर वृद्धावस्था की ओर जाता है। शक्ति धीरे-धीरे कम होती है। बाल सफेद होते हैं। त्वचा बदलती है। आंखों की रोशनी कम हो सकती है। शरीर रोगों से प्रभावित हो सकता है। प्रकृति का नियम परिवर्तन है।

यदि हमारी पहचान केवल शरीर से जुड़ी होगी, तो शरीर में होने वाला प्रत्येक परिवर्तन हमारे भीतर भय पैदा करेगा। यहीं से बुढ़ापे का भय, बीमारी का भय और मृत्यु का भय जन्म ले सकता है।

मृत्यु जीवन का सबसे बड़ा रहस्य है। मनुष्य मृत्यु को रोक नहीं सकता, लेकिन मृत्यु के विचार से डरता अवश्य है। इस भय का एक कारण यह भी है कि हम अपने अस्तित्व को शरीर से जोड़ लेते हैं। हमें लगता है कि शरीर समाप्त हुआ तो सब कुछ समाप्त हो गया।

आध्यात्मिक चिंतन इस प्रश्न को दूसरी दृष्टि से देखने का प्रयास करता है। वह कहता है कि शरीर परिवर्तनशील है, जबकि आत्मा या चेतना को शरीर से अलग समझने की परंपरा भारतीय दर्शन में बहुत पुरानी है। यहां आत्मा की अवधारणा को केवल धार्मिक विश्वास के रूप में नहीं, बल्कि आत्मचिंतन के विषय के रूप में भी देखा जा सकता है।

प्रश्न यह है कि यदि शरीर लगातार बदल रहा है, तो हमारे भीतर वह कौन-सा अनुभव है जो इन परिवर्तनों को देखता है? बचपन की तस्वीर देखकर हम कहते हैं–ह्लयह मैं था ह्व युवावस्था की तस्वीर देखकर भी कहते हैं–ह्लयह मैं था ह्व शरीर बदल गया, लेकिन ह्यमैंह्ल की अनुभूति बनी रही। यही प्रश्न मनुष्य को आत्मचिंतन की ओर ले जाता है।

शरीर के स्तर से ऊपर उठने की बात करते समय दूसरा प्रश्न मन का है। मनुष्य अक्सर सोचता है कि वह अपने विचार ही है। लेकिन यदि हम थोड़ी देर शांत बैठें और अपने विचारों को देखें तो पता चलता है कि विचार लगातार बदल रहे हैं।

कुछ समय पहले हम प्रसन्न थे, फिर किसी बात ने दुखी कर दिया। कुछ देर बाद किसी समाचार ने क्रोधित कर दिया। थोड़ी देर बाद किसी प्रिय व्यक्ति से बात हुई तो मन फिर हल्का हो गया। यदि विचार लगातार बदल रहे हैं, तो क्या बदलते हुए विचार ही हमारा पूरा अस्तित्व हैं?

यहीं से साक्षी भाव की अवधारणा सामने आती है। साक्षी भाव का अर्थ है–अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को बिना तुरंत उनके साथ बह जाने के देखना।

क्रोध आया तो यह देखना कि ह्लमेरे भीतर क्रोध उठ रहा है ह्व भय आया तो देखना कि ह्लमेरे भीतर भय की भावना है ह्व दुख आया तो समझना कि ह्लमैं दुख का अनुभव कर रहा हूं ह्व इस दृष्टि में एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण अंतर पैदा होता है। हम यह नहीं कहते कि ह्लमैं ही क्रोध हूं ह्व हम कहते हैं–ह्लमेरे भीतर क्रोध उत्पन्न हुआ है ह्व यह अंतर मनुष्य को अपने विचारों का गुलाम बनने से बचाने की दिशा में एक कदम हो सकता है।

आध्यात्मिक जीवन का अर्थ यह नहीं है कि मन में कोई विचार नहीं आना चाहिए। मन का स्वभाव ही विचार करना है। कभी सकारात्मक विचार आएंगे, कभी नकारात्मक। कभी आत्मविश्वास होगा, कभी संदेह। कभी प्रेम होगा, कभी क्रोध। कभी उत्साह होगा, कभी निराशा।

समस्या विचारों के आने में नहीं है। समस्या तब होती है जब हम हर विचार को सत्य मान लेते हैं और उसके अनुसार तुरंत प्रतिक्रिया करने लगते हैं। यदि किसी ने हमें अपमानित किया और उसी क्षण हमने क्रोध में प्रतिक्रिया दे दी, तो संभव है कि बाद में हमें पछताना पड़े। लेकिन यदि हम कुछ क्षण रुककर अपने भीतर उठ रहे क्रोध को देख लें, तो प्रतिक्रिया और उत्तर के बीच एक छोटा-सा अंतर पैदा होता है। यही अंतर विवेक का स्थान बन सकता है।

आत्मा के स्तर पर जीने का अर्थ शरीर या मन को छोड़ देना नहीं है। इसका अर्थ यह समझना है कि शरीर मेरा साधन है, मन मेरा उपकरण है और मेरी चेतना इन दोनों के अनुभवों की साक्षी हो सकती है।

जैसे हम कार का उपयोग करते हैं, लेकिन स्वयं को कार नहीं मानते, उसी तरह आध्यात्मिक दृष्टि में शरीर को जीवन की यात्रा का साधन माना जा सकता है। नाव नदी पार कराने के लिए जरूरी है। इसलिए नाव की देखभाल करनी होगी। लेकिन नाव को ही अंतिम मंजिल मान लेना बुद्धिमानी नहीं होगी।

इसी प्रकार शरीर की देखभाल करें, मन को स्वस्थ रखें, संसार में अपने कर्तव्यों का पालन करें–लेकिन अपने अस्तित्व को केवल इन सीमाओं में बंद न कर दें।

मनुष्य सुख चाहता है। अच्छा भोजन, आरामदायक घर, धन, प्रतिष्ठा, मनोरंजन और सफलता–ये सभी जीवन में सुख दे सकते हैं। इनका अपना महत्व है। लेकिन इनसे मिलने वाला सुख सामान्यतः स्थायी नहीं होता।

आज जिस वस्तु को पाने के लिए हम बेचैन हैं, उसे पाने के कुछ समय बाद वही वस्तु सामान्य लगने लगती है। फिर मन किसी दूसरी वस्तु की इच्छा करने लगता है। एक इच्छा पूरी होती है, दूसरी पैदा हो जाती है।

मनुष्य सोचता है कि अगली उपलब्धि उसे स्थायी खुशी देगी। लेकिन अगली उपलब्धि आने के बाद फिर कोई नया लक्ष्य सामने खड़ा हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि लक्ष्य बनाना गलत है। समस्या तब है जब हमारी पूरी शांति केवल बाहरी उपलब्धियों पर निर्भर हो जाए।

मन की शांति, संतोष, प्रेम, करुणा, सेवा और आत्मबोध ऐसे अनुभव हैं जो बाहरी वस्तुओं से अलग प्रकार की संतुष्टि प्रदान कर सकते हैं।

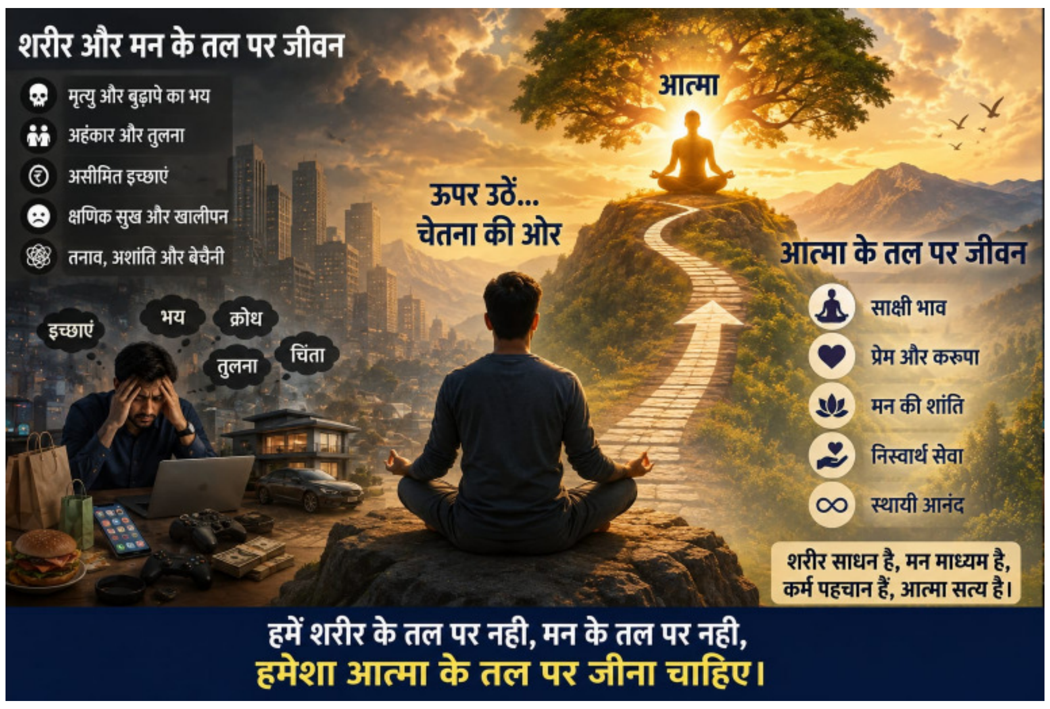
शरीर और मन के तल पर जीवन
मृत्यु और बुढ़ापे का भय
अहंकार और तुलना
असीमित इच्छाएं
क्षणिक सुख और खालीपन
तनाव, अशांति और बेचैनी
इच्छाएं
भय
क्रोध
तुलना
चिंता
ऊपर उठें... चेतना की ओर
आत्मा
आत्मा के तल पर जीवन
साक्षी भाव
प्रेम और करुणा
मन की शांति
निस्वार्थ सेवा
स्थायी आनंद
शरीर साधन है, मन माध्यम है, कर्म पहचान हैं, आत्मा सत्य है।
हमें शरीर के तल पर नही, मन के तल पर नही, हमेशा आत्मा के तल पर जीना चाहिए।

इंद्रियों का स्वभाव अनुभव करना है। आंख सुंदर दृश्य देखना चाहती है। कान मधुर संगीत सुनना चाहते हैं। जीभ स्वाद चाहती है। शरीर आराम चाहता है। इन इच्छाओं में अपने आप कोई दोष नहीं है।

लेकिन जब इच्छाएं मनुष्य को नियंत्रित करने लगती हैं, तब समस्या पैदा होती है। एक वस्तु मिली तो दूसरी चाहिए। दूसरी मिली तो तीसरी चाहिए। तुलना बढ़ती जाती है और संतोष पीछे छूटता जाता है।

विज्ञापन आधारित आधुनिक जीवन ने इस प्रवृत्ति को और मजबूत किया है। हमें लगातार बताया जाता है कि हमारे पास कुछ कम है–बेहतर फोन चाहिए, बड़ा घर चाहिए, महंगी गाड़ी चाहिए, अधिक प्रसिद्धि चाहिए, बेहतर जीवनशैली चाहिए।

मनुष्य अपनी वास्तविक जरूरत और बाजार द्वारा पैदा की गई इच्छा के बीच अंतर करना भूल सकता है। आत्मचेतना का मार्ग इस अंतर को पहचानने की क्षमता विकसित करने का प्रयास है।

अनासक्ति शब्द को कई बार गलत समझा जाता है। अनासक्ति का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य अपने परिवार से प्रेम न करे, अपने काम को छोड़ दे या संसार से भाग जाए। अनासक्ति का अर्थ है–कर्तव्य निभाते हुए परिणाम और वस्तुओं के प्रति अत्यधिक मानसिक आसक्ति से मुक्त होने का प्रयास।

परिवार से प्रेम करें, लेकिन अधिकार की भावना इतनी न बढ़े कि प्रेम बंधन बन जाए। धन कमाएं, लेकिन धन को अपनी पहचान न बना लें। सफलता प्राप्त करें, लेकिन असफलता को अपनी संपूर्ण पहचान न बनने दें। सम्मान मिले तो विनम्र रहें और अपमान मिले तो आत्ममंथन करें। यही संतुलन जीवन को परिपक्व बनाता है।

मनुष्य जब संसार से विदा होता है, तब उसके साथ उसका पद, संपत्ति और बाहरी रूप नहीं जाता। पीछे रह जाते हैं उसके कर्म। लोग याद करते हैं कि उसने दूसरों के साथ कैसा व्यवहार किया। क्या उसने किसी जरूरतमंद की मदद की? क्या उसने अपने परिवार के साथ प्रेम से व्यवहार किया? क्या उसने किसी कमजोर व्यक्ति का शोषण किया या उसका हाथ थामा? क्या उसके कारण किसी के जीवन में आशा आई?

यही प्रश्न मनुष्य के जीवन को उसके बाहरी रूप से कहीं अधिक अर्थपूर्ण बनाते हैं। इसलिए आत्मा के स्तर पर जीने का एक महत्वपूर्ण अर्थ यह भी है कि हम अपने कर्मों को अधिक महत्व दें।

आत्मचेतना की यात्रा के लिए किसी बड़े आयोजन की आवश्यकता नहीं है। मनुष्य अपने दैनिक जीवन में कुछ मिनट मौन बैठकर शुरूआत कर सकता है। आंखें बंद करें। आराम से बैठें। अपनी सांसों को देखें। सांस भीतर जा रही है। सांस बाहर आ रही है। मन में विचार उठ रहे हैं। उन्हें रोकने की आवश्यकता नहीं। केवल उन्हें आते-जाते हुए देखने का प्रयास करें।

धीरे-धीरे मनुष्य अनुभव कर सकता है कि वह अपने विचारों को देख भी सकता है। यही साक्षी भाव की प्रारंभिक साधना हो सकती है। हालांकि ध्यान कोई जादुई प्रक्रिया नहीं है। मन को शांत होने में समय लग सकता है। लगातार अभ्यास और धैर्य आवश्यक है।

आज का मनुष्य शोर से घिरा हुआ है। मोबाइल की घंटियां, सोशल मीडिया की सूचनाएं, लगातार आती खबरें, मनोरंजन और बातचीत ने हमारे जीवन में बाहरी आवाजों की संख्या बढ़ा दी है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण आवाज शायद भीतर की है, जिसे सुनने के लिए मौन चाहिए।

कुछ समय बिना मोबाइल, बिना टीवी और बिना किसी बाहरी मनोरंजन के स्वयं के साथ बैठना कठिन लग सकता है। यही कठिनाई बताती है कि हम अपने भीतर से कितने दूर हो गए हैं। मौन भागना नहीं है। मौन अपने भीतर लौटने का अवसर है।

यदि व्यक्ति अपने भीतर अधिक सजग होता है, तो उसका प्रभाव केवल उसके व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहता। जो व्यक्ति अपने क्रोध को पहचानना सीखता है, वह दूसरों पर कम क्रोध कर सकता है। जो व्यक्ति अपनी इच्छाओं को समझता है, वह दूसरों की वस्तुओं से कम ईर्ष्या कर सकता है। जो व्यक्ति अपने भीतर करुणा विकसित करता है, वह समाज में अधिक संवेदनशील व्यवहार कर सकता है।

इसलिए आत्मचेतना केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक यात्रा नहीं है। इसका सामाजिक महत्व भी है। यदि मनुष्य भीतर से संतुलित होगा, तो परिवार अधिक संतुलित हो सकते हैं। परिवार संतुलित होंगे तो समाज में तनाव कम हो सकता है।

आज मनुष्य के पास सुविधाएं पहले से कहीं अधिक हैं, लेकिन मानसिक बेचैनी भी कम नहीं हुई है। हमारे पास संचार के साधन हैं, लेकिन संवाद की कमी दिखाई देती है। हमारे पास मनोरंजन के अनेक साधन हैं, लेकिन भीतर का खालीपन कई बार बना रहता है। हमारे पास जानकारी बहुत है, लेकिन आत्मज्ञान की खोज अक्सर पीछे छूट जाती है।

ऐसे समय में शरीर, मन और आत्मचेतना के बीच अंतर को समझने की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। मनुष्य यदि हर समस्या का समाधान केवल बाहरी दुनिया में खोजता रहेगा, तो संभव है कि वह अपने भीतर मौजूद कई प्रश्नों से बचता रहे। कभी-कभी समाधान बाहर नहीं, भीतर की दृष्टि बदलने से आता है।

मानव जीवन को नदी में चलती नाव के समान समझना एक सुंदर प्रतीक है। शरीर नाव है। मन नाविक की तरह है। संसार नदी है। और जीवन का उद्देश्य केवल नाव को सजाते रहना नहीं, बल्कि यात्रा को अर्थपूर्ण बनाना है।

नाव की मरम्मत करनी होगी। उसे स्वच्छ रखना होगा। उसे सुरक्षित रखना होगा। लेकिन नाव को ही अपना अंतिम घर मान लेना यात्रा के उद्देश्य को भुला देना है। इसी प्रकार शरीर की देखभाल करें, मन को स्वस्थ रखें, संसार में अपने कर्तव्यों का पालन करें–लेकिन अपने अस्तित्व को केवल इन सीमाओं में बंद न कर दें।

मनुष्य का जीवन केवल जन्म से मृत्यु तक की शारीरिक यात्रा नहीं माना जा सकता। यह चेतना के विकास की यात्रा भी हो सकती है।

शरीर हमें संसार में कार्य करने की शक्ति देता है। मन हमें अनुभव, विचार और कल्पना देता है। लेकिन आत्मचेतना हमें यह प्रश्न पूछने की क्षमता देती है कि इन सबके पीछे हमारा वास्तविक स्वरूप क्या है।

शरीर को नकारना नहीं है। मन को दबाना नहीं है। संसार से भागना नहीं है। बल्कि शरीर की देखभाल करते हुए, मन को समझते हुए और अपने भीतर की चेतना के प्रति जागरूक होते हुए जीवन जीने का प्रयास करना है।

शायद यही वह यात्रा है जिसमें मनुष्य धीरे-धीरे बाहरी पहचान से भीतर की पहचान की ओर बढ़ता है। जब मनुष्य केवल अपने रूप को नहीं, अपने चरित्र को महत्व देता है; केवल अपनी इच्छाओं को नहीं, अपने कर्तव्यों को महत्व देता है; केवल अपने सुख को नहीं, दूसरों के सुख को भी महत्व देता है; और केवल अपनी उपलब्धियों को नहीं, अपने अस्तित्व के अर्थ को समझने का प्रयास करता है–तब उसके जीवन में एक गहरा परिवर्तन शुरू हो सकता है।

शरीर हमारा साधन है। मन हमारा माध्यम है। कर्म हमारी पहचान हैं। और आत्मचेतना वह प्रकाश है, जिसके माध्यम से हम स्वयं को समझने की यात्रा शुरू कर सकते हैं।

अंततः प्रश्न यह नहीं कि हमने जीवन में कितना पाया। प्रश्न यह है कि जो जीवन हमें मिला, उसे हमने कितनी जागरूकता, करुणा, प्रेम और सत्य के साथ जिया।

यही शरीर से आत्मा तक की यात्रा का सार है।

खवड्या डोंगर हादसा: एक परिवार के तीन लोगों की मौत

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

संवाददाताः अशोक कुमार सिंह

छत्रपति संभाजीनगर, 24 अगस्त 2026। महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर जिले के तिसगांव क्षेत्र स्थित खवड्या डोंगर पर 21 अगस्त को हुई दर्दनाक घटना में एक ही परिवार के तीन सदस्यों की मौत हो गई। मृतकों की पहचान 18 वर्षीय कुणाल चांदगुडे, उनके पिता मुरलीधर चांदगुडे और मां संगीता चांदगुडे के रूप में हुई है। घटना के बाद इलाके में शोक का माहौल है। पुलिस मामले की परिस्थितियों और घटना के कारणों की जांच कर रही है।

खवड्या डोंगर की दर्दनाक घटना
एक ही परिवार के
तीन लोगों की मौत
iPhone विवाद से आगे भी जांच

प्राप्त जानकारी के अनुसार, कुणाल किसी कारण से खवड्या डोंगर की पहाड़ी पर चला गया था। वह पहाड़ी के ऊंचे हिस्से में ऐसी स्थिति में पहुंच गया, जिसके बाद परिवार के सदस्यों और स्थानीय लोगों में चिंता फैल गई। उसे सुरक्षित नीचे लाने के लिए परिवार, स्थानीय लोग, पुलिस और बचाव दल ने बातचीत के माध्यम से काफी देर तक समझाने का प्रयास किया। बताया जा रहा है कि दोपहर के आसपास कुणाल को सुरक्षित नीचे लाने के प्रयास में उसके पिता मुरलीधर भी उसके पास पहुंचे। इसी दौरान दोनों के नीचे गिरने की जानकारी सामने आई। घटना के बाद मां संगीता भी पहाड़ी की ओर गईं और उनके भी नीचे गिरने की सूचना मिली। हादसे में तीनों की मौत हो गई।

घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस और बचाव दल मौके पर पहुंचे। शवों को बाहर निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। पुलिस द्वारा घटना से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जांच की जा रही है।

iPho»»fe और एटकविवाद की चर्चा, लेकिन पुष्टि नहीं

घटना के बाद सोशल मीडिया और कुछ शुरूआती चर्चाओं में महंगे ढँड्ल्ली और उसकी किस्त (एटक) से जुड़े कथित पारिवारिक विवाद को घटना की वजह से जोड़कर देखा गया। हालांकि, उपलब्ध जानकारी के आधार पर पुलिस ने अभी इस दावे को घटना का अंतिम या प्रमाणित कारण नहीं बताया है।

ऐसी स्थिति में किसी अपुष्ट चर्चा को घटना का निश्चित कारण मानना उचित नहीं होगा। पुलिस जांच के दौरान आर्थिक परिस्थितियों, पारिवारिक संबंधों, घटनाक्रम और अन्य संभावित पहलुओं की पड़ताल की जा रही है। जांच पूरी होने के बाद ही घटना की वास्तविक पृष्ठभूमि को लेकर स्पष्ट स्थिति सामने आ सकेगी है।

रिवाजों को महत्व देने से नहीं, रिश्तों को समझने और महत्व देने से बनते हैं मजबूत संबंध

रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का ऐसा पर्व है, जो भाई-बहन के रिश्ते में प्रेम, विश्वास, स्नेह और जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करता है। राखी की डोर केवल कलाई पर नहीं बंधती, बल्कि यह भाई-बहन के बीच भावनात्मक जुड़ाव और एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ खड़े रहने के संकल्प का प्रतीक है। बहन भाई की लंबी उम्र और सुख-समृद्धि की कामना करती है तो भाई भी बहन की सुरक्षा, सम्मान और हर परिस्थिति में साथ निभाने का संकल्प लेता है।

लेकिन बदलते सामाजिक परिवेश में इस पवित्र रिश्ते के सामने कुछ नई चुनौतियां भी खड़ी हुई हैं। आज कई परिवारों में धन-दौलत, जमीन-जायदाद और संपत्ति के अधिकार जैसे विषय रिश्तों के बीच तनाव का कारण बन रहे हैं। कानून ने बेटियों और बेटों को संपत्ति में समान अधिकार दिया है। यह अधिकार न्याय और समानता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मगर सवाल केवल अधिकार का नहीं, बल्कि उस अधिकार को रिश्तों की संवेदनशीलता, आपसी संवाद और पारिवारिक सहमति के साथ निभाने का भी है।

अधिकार मांगना गलत नहीं है। अपने वैधानिक अधिकारों के लिए आवाज उठाना हर व्यक्ति का हक है। लेकिन जब अधिकारों का विवाद इतना बढ़ जाए कि भाई-बहन एक-दूसरे से बातचीत तक बंद कर दें, वर्षों पुराने संबंध कटुता में बदल जाएं और परिवार बिखरने लगे, तब यह अवश्य विचार करने का विषय है कि कहीं संपत्ति की कीमत रिश्तों से तो बड़ी नहीं हो गई।

यह भी समझना जरूरी है कि संपत्ति को लेकर विवाद करने वाली हर बहन या हर भाई को एक ही नजर से नहीं देखा जा सकता। अधिकांश परिवारों में भाई-बहन आज भी प्रेम, विश्वास और त्याग के साथ अपने रिश्ते निभा रहे हैं। समस्या उन परिस्थितियों में पैदा होती है, जब लालच, अहंकार, गलत सलाह या आपसी अविश्वास वर्षों पुराने संबंधों में ऐसी दरार पैदा कर देता है, जिसे भरना कठिन हो जाता है।

भाई और बहन दोनों की अपनी-अपनी जिम्मेदारियां हैं। बेटी विवाह के बाद भी भावनात्मक रूप से अपने मायके से जुड़ी रहती है। भाई भी माता-पिता, परिवार और बहन के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाता है। माता-पिता की वृद्धावस्था में सेवा करना, उनके निधन के बाद पारिवारिक परंपराओं को निभाना और एक-दूसरे के सुख-दुख में खड़ा रहना–इन जिम्मेदारियों का मूल्य किसी संपत्ति या धनराशि से नहीं आंका जा सकता।

इसलिए रिश्तों को केवल कानून की नजर से नहीं, संवेदना की नजर से भी देखना होगा। कानून अधिकार देता है, लेकिन परिवारों को जोड़ने का काम संवाद, विश्वास और समझदारी करती है।

हमारे समाज में कभी रिश्तों और विश्वास की ऐसी मिसालें थीं, जब अनजान व्यक्ति को भी धर्म भाई या धर्म बहन बना लिया जाता था। बेटियां जब ससुराल जाती थीं तो परिवार के लोग किसी विश्वसनीय परिचित के साथ उन्हें विदा कर देते थे। उस दौर में सामाजिक संबंधों की बुनियाद विश्वास पर टिकी थी। आज तकनीक और आधुनिकता ने जीवन को आसान जरूर बनाया है, लेकिन कई जगहों पर आपसी विश्वास कमजोर भी हुआ है।

जब अपनों पर विश्वास कम होने लगे और खून के रिश्ते ही स्वार्थ, अहंकार तथा संपत्ति के विवाद में उलझने लगें, तब त्योहारों की आत्मा भी कमजोर पड़ने लगती है। रक्षाबंधन हमें केवल राखी बांधने की परंपरा नहीं सिखाता, बल्कि त्याग, विश्वास, सम्मान और एक-दूसरे के साथ खड़े रहने की सीख देता है।

इस रक्षाबंधन पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि अधिकारों के साथ रिश्तों की मयार्दा को भी समझेंगे। बहन अपने भाई को केवल संपत्ति के हिस्से से नहीं, बल्कि अपने स्नेह और विश्वास से जोड़े। भाई भी बहन को केवल एक जिम्मेदारी समझने के बजाय अपने परिवार का अभिन्न हिस्सा माने। जहां मतभेद हों, वहां संवाद हो; जहां शिकायत हो, वहां समाधान की कोशिश हो और जहां संपत्ति का प्रश्न हो, वहां न्याय के साथ संवेदनशीलता भी बनी रहे।

रिश्ते कागजों से नहीं, भावनाओं से बनते हैं। अधिकार जरूरी हैं, लेकिन रिश्ते अनमोल हैं। संपत्ति बांटी जा सकती है, धन फिर कमाया जा सकता है, लेकिन यदि भाई-बहन का विश्वास टूट जाए तो उसे वापस हासिल करना बहुत कठिन होता है।

रक्षाबंधन की असली सार्थकता तभी है, जब राखी की डोर केवल कलाई को नहीं, बल्कि दिलों को भी बांधे। इस पर्व पर हमें केवल रिवाज निभाने के बजाय रिश्तों को समझने, विश्वास बढ़ाने और एक-दूसरे के लिए थोड़ा त्याग करने का संकल्प लेना चाहिए।

क्योंकि सच्ची राखी वही है, जो भाई-बहन के बीच प्रेम की डोर को हर परिस्थिति में मजबूत बनाए।

सांवलराम चौधरी असाडा
एडिटर इन चीफ, पटेल टीवी
जोधपुर (राजस्थान)

बेंगलुरु में पेरेंटिंग शाला: संस्कारों संग बच्चों की समझ पर जोर

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 24 अगस्त 2026। आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि श्री 108 वीरसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में रविवार को बेंगलुरु में ह्यपेरेंटिंग शालाह्न का आयोजन किया गया। ह्यसाथ जुड़ें, साथ सीखें और साथ बढ़ेंह्न की भावना पर आधारित इस विशेष कार्यक्रम में अभिभावकों और बच्चों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। आधुनिक जीवनशैली में बच्चों के पालन-पोषण, व्यक्तित्व निर्माण, पारिवारिक संवाद और संस्कारों को लेकर सामने आ रही चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई थी। इसका उद्देश्य केवल अभिभावकों को बच्चों की परवरिश से जुड़ी जानकारी देना नहीं, बल्कि परिवार में आपसी संवाद, समझ और विश्वास को मजबूत करना भी रहा।

सुधारने से पहले जुड़ेंह्न पर जोर कार्यक्रम

की शुरूआत नाश्ता, पंजीकरण और स्वागत सामग्री वितरण से हुई। इसके बाद ह्यसुधारने से पहले जुड़ेंह्न विषय पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। इसमें बच्चों के व्यवहार में बदलाव लाने से पहले उनके साथ भावनात्मक जुड़ाव, विश्वास और प्रभावी संवाद स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

अभिभावकों को यह संदेश दिया गया कि बच्चों को केवल निर्देश देने या नियंत्रित करने के बजाय उनकी भावनाओं, आवश्यकताओं और दृष्टिकोण को समझना जरूरी है। संवाद और विश्वास को पारिवारिक संबंधों की मजबूत आधारशिला बताते हुए कहा गया कि सुधार से पहले संबंध और अनुशासन से पहले संवाद आवश्यक है।

बच्चों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

पेरेंटिंग शाला में बच्चों के लिए ह्यरंगों की दुनियाह्न नाम से विशेष चित्रकला गतिविधि आयोजित की गई। बच्चों ने रंगों के माध्यम से अपनी कल्पनाशक्ति और रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त किया। इसके अलावा खेल एवं गतिविधि क्षेत्र में मनोरंजक खेल, रचनात्मक गतिविधियां तथा जैन कथाओं और जीवन-मूल्यों से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए गए।

बच्चों के लिए विशेष जैन फास्ट फूड की व्यवस्था भी की गई। आयोजन का उद्देश्य बच्चों को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराना रहा, जिसमें वे खेल-खेल में सीख सकें, रचनात्मक रूप से सोच सकें और अपने संस्कारों से जुड़े रहें।

डॉ. रीना जैन ने किया मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण अभिभावकों के लिए आयोजित मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन सत्र रहा। मनोविज्ञान के क्षेत्र में 23 से अधिक वर्षों के अनुभव वाली डॉ. रीना जैन ने बच्चों के पालन-पोषण से जुड़ी व्यावहारिक चुनौतियों और उनके समाधान पर मार्गदर्शन दिया।

उन्होंने बच्चों के व्यवहार को समझने, उनकी भावनाओं को पहचानने, प्रभावी संवाद स्थापित करने तथा बदलते पारिवारिक परिवेश में अभिभावकों की भूमिका जैसे विषयों पर उपयोगी जानकारी साझा की। सत्र में इस बात पर जोर दिया गया कि बच्चों की कई समस्याओं का समाधान केवल डांट, नियंत्रण या दबाव से नहीं, बल्कि धैर्य, समझ, संवाद और सकारात्मक व्यवहार से अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

जड़ें और पंखह्न का संदेश

इसके बाद माता-पिता और बच्चों का संयुक्त सत्र ह्यजड़ें और पंखह्न विषय पर आयोजित किया गया। ह्यमजबूत जड़ें, स्वतंत्र पंखह्न को सत्र का मूल संदेश बनाया गया। इसमें बच्चों को संस्कृति, परिवार और संस्कारों से जोड़ने के साथ-साथ उनकी प्रतिभा, सोच और व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास के महत्व को रेखांकित किया गया।

अभिभावकों को यह समझाने का प्रयास किया गया कि बच्चों के प्रत्येक निर्णय को नियंत्रित करने के बजाय उन्हें इतना सक्षम बनाया जाना चाहिए कि वे भविष्य में विवेकपूर्ण निर्णय स्वयं ले सकें। संयुक्त सत्र ने परिवार में आपसी समझ और संवाद को बढ़ाने का संदेश दिया।

करियर और व्यवहार परामर्श की भी व्यवस्था

कार्यक्रम स्थल पर करियर एवं व्यवहार परामर्श केंद्र की व्यवस्था भी की गई। यहां बच्चों और अभिभावकों को करियर विकल्पों, बच्चों की रुचियों, व्यक्तित्व और व्यवहार से जुड़े विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर मिला।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में बच्चों के लिए केवल करियर का चयन ही नहीं, बल्कि उनकी रुचि, क्षमता और व्यक्तित्व को समझना भी महत्वपूर्ण है। इस पहल के माध्यम से बच्चों के वर्तमान व्यवहार से लेकर उनके भविष्य की दिशा तक विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास किया गया।

कार्यक्रम में चित्र स्मृति एवं अभिव्यक्ति दीवार भी आकर्षण का केंद्र रही, जहां परिवारों को साथ समय बिताने और आयोजन से जुड़ी यादों को संजोने का अवसर मिला। पुण्यार्जक परिवारों का सहयोग आयोजन में पुण्यार्जक परिवारों एवं संस्थानों का भी सहयोग रहा। धीरज कलमकार, ज्ञानेश जैन (येलहांका), मोहित-प्रियंशी जैन तथा कनॉपी अर्ली ईयर्स प्री-स्कूल ने पेरेंटिंग शाला में पुण्यार्जक के रूप में सहभागिता की। आयोजन समिति एवं जैन समाज की ओर से सहयोगी परिवारों और संस्थानों के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2026 का पावन वर्षायोग (चातुर्मास) बेंगलुरु में आयोजित हो रहा है। इस दौरान धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ बच्चों, युवाओं, परिवारों, शिक्षा और संस्कार निर्माण से जुड़ी विभिन्न समाजोपयोगी गतिविधियां भी आयोजित की जा रही हैं। इसी क्रम में पेरेंटिंग शाला को आधुनिक अभिभावकत्व की चुनौतियों को जैन जीवन-मूल्यों, संस्कारों और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ने वाली पहल के रूप में प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम ने यह संदेश दिया कि बच्चों का बेहतर भविष्य केवल अच्छी शिक्षा और सुविधाओं से नहीं, बल्कि मजबूत पारिवारिक संबंधों, संस्कार, संवाद, विश्वास और सही मार्गदर्शन से भी निर्मित होता है। बच्चों को समय देना, उनकी बात सुनना, उनकी भावनाओं को समझना और उन्हें जीवन-मूल्यों से जोड़ना अभिभावकों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। मजबूत संस्कारों की जड़ों के साथ स्वतंत्र सोच और आत्मविश्वास के पंख देना ही सार्थक अभिभावकत्व की दिशा है।

समाचार प्रेषकः विपिन कुमार जैन।

श्रीराम कथा महोत्सव की कलश यात्रा में उमड़ा उत्साह

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 24 अगस्त 2026। सर्वजन एकता मंच एवं कर्नाटक उत्तर भारतीय विकास सेवा संघ के संयुक्त तत्वावधान में जयनगर स्थित महाराजा अग्रसेन भवन में आयोजित होने वाले 9 दिवसीय श्रीराम कथा महोत्सव 2026 के अवसर पर कलश यात्रा निकाली गई। धार्मिक एवं सामाजिक समरसता के संदेश के साथ आयोजित इस यात्रा में जनप्रतिनिधियों, समाजसेवियों और आयोजन समिति के पदाधिकारियों ने भाग लिया।

कलश यात्रा में विधायक उदय गरुडाचार अपनी पत्नी के साथ शामिल हुए। इस दौरान समाजसेवी महेंद्र मुणोत तथा सर्वजन एकता मंच के अध्यक्ष राकेश शुक्ला भी उपस्थित रहे। श्रद्धालुओं और आयोजकों ने धार्मिक आस्था एवं उत्साह के साथ कलश यात्रा में सहभागिता की।

आयोजकों के अनुसार, श्रीराम कथा महोत्सव का उद्देश्य भगवान श्रीराम के आदर्शों, मयार्दा, सत्य, सेवा और सामाजिक एकता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाना है। नौ दिवसीय आयोजन के दौरान श्रद्धालुओं के लिए श्रीराम कथा सहित विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

कलश यात्रा के माध्यम से आयोजन का विधिवत शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम में समाज के विभिन्न वर्गों की सहभागिता ने धार्मिक आयोजन के साथ सामाजिक एकता और सद्भाव की भावना को भी मजबूती प्रदान की।

नाली खुली रही, सड़क पर गिरा पेड़; BBMP की कार्यशैली पर सवाल

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु संवाददाता धन्नाराम चौधरी

बेंगलुरु, 24 अगस्त 2026। बेंगलुरु शहर के ऑयल मिल रोड-कम्मनहल्ली मार्ग पर सोमवार को बीबीएमपी की ओर से चल रहे नाली सफाई अभियान के दौरान अधूरा छोड़ा गया काम परेशानी का कारण बन गया। नाली के पास खड़ा एक पेड़ अचानक सड़क के बीचोंबीच गिर गया, जिससे मार्ग पर आवागमन बाधित हो गया। पेड़ के गिरने के साथ बिजली का खंभा भी अधर में लटक गया, जिससे मौके पर दुर्घटना की आशंका बढ़ गई।

स्थानीय लोगों के अनुसार, नाली की सफाई के लिए पिछले चार-पांच दिनों से सड़क किनारे नाली को खोलकर छोड़ दिया गया था। कार्य पूरा नहीं होने और खुले हिस्से के आसपास पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था नहीं होने के कारण नाली के पास खड़ा पेड़ कमजोर होकर सड़क पर गिर गया। हालांकि, पेड़ गिरने के दौरान किसी व्यक्ति के हताहत होने की सूचना नहीं है। पेड़ के सड़क पर गिरने से ऑयल मिल रोड से कम्मनहल्ली की ओर जाने वाले मार्ग पर यातायात प्रभावित हुआ। बिजली का खंभा भी असुरक्षित स्थिति में लटकने से स्थानीय लोगों में चिंता देखी गई। ऐसे में मार्ग से गुजरने वाले वाहन चालकों और पैदल यात्रियों के लिए अतिरिक्त सावधानी जरूरी हो गई।

अधूरे काम पर उठे सवाल

नाली की सफाई और जल निकासी व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए किए जा रहे कार्य का उद्देश्य निश्चित रूप से शहरवासियों को सुविधा देना है। लेकिन सवाल यह है कि यदि काम शुरू किया गया था तो उसे समय पर पूरा क्यों नहीं किया गया? कई दिनों तक नाली को खुला छोड़ना और उसके आसपास पर्याप्त सुरक्षा इंतजाम नहीं करना नागरिक सुरक्षा के लिहाज से गंभीर विषय है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि पेड़ गिरने के समय सड़क पर कोई वाहन या व्यक्ति मौजूद होता तो स्थिति गंभीर हो सकती थी। सौभाग्य से इस घटना में जनहानि नहीं हुई। लेकिन हादसा टल जाना व्यवस्था की खामियों को नजरअंदाज करने का कारण नहीं हो सकता।

सफाई अभियान या नई मुसीबत?

नाली की सफाई का काम नागरिक सुविधा के लिए है, लेकिन यदि अधूरा काम सड़क बंद होने और दुर्घटना के खतरे का कारण बन जाए तो व्यवस्था पर सवाल उठना स्वाभाविक है। शहर में विकास और सफाई कार्यों के दौरान नागरिकों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलनी चाहिए। स्थानीय लोगों ने मांग की है कि सड़क से गिरे पेड़ को तत्काल हटाया जाए, बिजली के खंभे को सुरक्षित किया जाए और नाली का लंबित कार्य जल्द पूरा किया जाए। साथ ही ऐसे कार्यस्थलों पर सुरक्षा बैरिकेडिंग और चेतावनी संकेतों की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।

यह घटना जिम्मेदार विभाग के लिए एक सीधा संदेश भी है–नाली साफ करने के नाम पर सड़क और सुरक्षा व्यवस्था को ह्यखुलाह्न छोड़ देना विकास कार्य नहीं, बल्कि समस्या को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना है। समय पर काम पूरा होता और आवश्यक सुरक्षा उपाय किए जाते तो संभवतः यह स्थिति पैदा ही नहीं होती। फिलहाल राहत की बात यही है कि पेड़ गिरने से कोई जनहानि नहीं हुई। मगर हादसे की संभावना ने यह सवाल जरूर खड़ा कर दिया है कि किसी बड़े हादसे का इंतजार करने के बजाय संबंधित विभाग कब अधूरे काम को पूरा करेगा।

मीडिया कवरेज में भेदभाव का आरोप, अशोक ने स्पीकर को लिखा पत्र

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु। कर्नाटक विधानसभा के मानसून सत्र के दौरान मीडिया कवरेज में कथित भेदभाव को लेकर विपक्ष ने सवाल उठाए हैं। विधानसभा में विपक्ष के नेता आर. अशोक ने सोमवार को विधानसभा अध्यक्ष जी.एस. पाटिल को पत्र लिखकर मामले में तत्काल हस्तक्षेप करने की मांग की है।

आर. अशोक ने अपने पत्र में आरोप लगाया कि 13 अगस्त से शुरू हुए मानसून सत्र के दौरान विधानसभा की कार्यवाही से संबंधित विपक्ष के नेता और विपक्षी विधायकों के बयान, फोटो तथा वीडियो कथित रूप से मीडिया के लिए जारी नहीं किए जा रहे हैं। उनका कहना है कि इसके कारण विपक्षी सदस्यों की गतिविधियों को प्रिंट मीडिया और टेलीविजन चैनलों में अपेक्षित स्थान नहीं मिल पा रहा है।

इसके विपरीत, अशोक ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री, मंत्रियों और सत्तारूढ़ दल के विधायकों के बयान, फोटो और वीडियो लगातार जारी किए जा रहे हैं। उन्होंने इसे विधानसभा की

कार्यवाही की मीडिया कवरेज में असमानता बताते हुए कहा कि ऐसी स्थिति से सत्तापक्ष को अधिक प्रचार मिलने की धारणा बन रही है।

भाजपा नेता ने विधानसभा अध्यक्ष से अनुरोध किया कि वे सूचना विभाग के संबंधित अधिकारियों को विधानसभा से मीडिया सामग्री जारी करने की प्रक्रिया में कथित असमानता को तत्काल दूर करने का निर्देश दें। उन्होंने कहा कि सदन के भीतर सत्तापक्ष और विपक्ष, दोनों के निर्वाचित प्रतिनिधियों को मीडिया कवरेज में समान अवसर मिलना चाहिए।

अशोक ने चेतावनी दी कि यदि समस्या का समाधान नहीं किया गया तो विपक्ष संबंधित अधिकारियों के खिलाफ विशेषाधिकार हनन प्रस्ताव लाने पर विचार करेगा। उन्होंने विधानसभा से जुड़ी मीडिया सामग्री तक समान पहुंच को निष्पक्ष जनप्रतिनिधित्व के लिए आवश्यक बताया।

आर. अशोक का यह आरोप ऐसे समय सामने आया है, जब विधानसभा का मानसून सत्र जारी है और विपक्ष विभिन्न मुद्दों को लेकर कांग्रेस सरकार पर लगातार हमलावर है। हालांकि, मीडिया कवरेज में भेदभाव के आरोपों पर संबंधित सूचना विभाग या सरकार की ओर से तत्काल कोई विस्तृत प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

नागेंद्र के इस्तीफे पर भाजपा का संघर्ष जारी रखने का ऐलान

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु। कर्नाटक में कथित भ्रष्टाचार के मामले को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने राज्य सरकार के खिलाफ अपना विरोध तेज कर दिया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बी.वाई. विजयेंद्र ने विधानसभा घेराव के दौरान पार्टी नेताओं और कार्यकताओं की गिरफ्तारी पर नाराजगी जताते हुए कहा कि सरकार विपक्ष के आंदोलन को दबाने का प्रयास न करे। उन्होंने स्पष्ट किया कि विधानसभा का सत्र समाप्त होने के बाद भी पार्टी का संघर्ष जारी रहेगा।

विधानसभा घेराव के लिए भाजपा नेताओं और कार्यकताओं ने प्रदर्शन किया, जिसके दौरान पुलिस ने कई नेताओं और कार्यकताओं को हिरासत में लिया। विजयेंद्र ने मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री की ओर से भाजपा के आंदोलन को लेकर की गई टिप्पणियों पर पलटवार करते हुए कहा कि राज्य की जनता सरकार के कामकाज और उसके तौर-तरीकों को देख रही है। विजयेंद्र ने आरोप लगाया कि दलितों के कल्याण के लिए आवंटित धन से जुड़े मामले में आरोपी मंत्री नागेंद्र का बचाव किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह केवल किसी एक मंत्री के इस्तीफे का मुद्दा नहीं है, बल्कि दलितों के अधिकारों और सार्वजनिक धन की जवाबदेही का सवाल है। उन्होंने कांग्रेस पर सवाल उठाते हुए पूछा कि वह नागेंद्र के मामले में कार्रवाई करने से क्यों हिचक रही है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि पार्टी सदन के भीतर भी इस मुद्दे को उठाती रही है और सदन के बाहर भी जनता के बीच अपना आंदोलन जारी रखेगी। उन्होंने कहा कि सरकार के दबाव से भाजपा का संघर्ष रुकने वाला नहीं है।

नागेंद्र को हटाने में देरी क्यों: आर. अशोक

विधानसभा में विपक्ष के नेता आर. अशोक ने भी सरकार पर निशाना साधते हुए सवाल किया कि नागेंद्र के खिलाफ आरोप और उपलब्ध साक्ष्यों के बावजूद उनके खिलाफ कार्रवाई करने में देरी क्यों की जा रही है। उन्होंने सरकार से मामले में स्पष्ट जवाब और जिम्मेदारी तय करने की मांग की।

दलितों के धन के दुरुपयोग का आरोप

विधान परिषद में विपक्ष के नेता चलवादी नारायणस्वामी ने आरोप लगाया कि सरकार के कार्यकाल में दलितों के लिए निर्धारित धन के उपयोग को लेकर गंभीर सवाल खड़े हुए हैं। उन्होंने कहा कि आरोपों से घिरे व्यक्ति को मंत्री पद पर बनाए रखना उचित नहीं है। नारायणस्वामी ने नागेंद्र के इस्तीफे की मांग करते हुए कहा कि भाजपा इस मुद्दे को सदन के भीतर और बाहर दोनों जगह उठाती रहेगी। उन्होंने सरकार से मामले में पारदर्शी जांच और जवाबदेही सुनिश्चित करने की मांग की। भाजपा नेताओं के इन बयानों के बीच राज्य की राजनीति में नागेंद्र के इस्तीफे का मुद्दा एक बार फिर प्रमुख विपक्षी मुद्दा बन गया है। हालांकि, सरकार की ओर से इस संबंध में अंतिम निर्णय और आगे की कार्रवाई पर आधिकारिक स्थिति स्पष्ट होना बाकी है।

BEML में 1,346 अप्रेंटिस पद, बिना परीक्षा चयन

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु। भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड (इएटछ) ने क्ळक, डिप्लोमा और स्नातक युवाओं के लिए अप्रेंटिसशिप का बड़ा अवसर दिया है। कंपनी ने बेंगलुरु, मैसूर, केजीएफ और पालक्काड स्थित अपने मैन्युफैक्चरिंग कॉम्प्लेक्स में कुल 1,346 अप्रेंटिस पदों के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। एक वर्ष की इस अप्रेंटिसशिप के दौरान चयनित अभ्यर्थियों को निर्धारित मासिक स्टाइपेंड भी दिया जाएगा।

इस भर्ती की खास बात यह है कि अभ्यर्थियों का चयन लिखित परीक्षा और साक्षात्कार के बिना किया जाएगा। चयन शैक्षणिक योग्यता तथा दस्तावेज सत्यापन के आधार पर होगा। आवेदन प्रक्रिया 18 अगस्त 2026 से शुरू हो चुकी है और इच्छुक अभ्यर्थी 8 सितंबर 2026 रात 11 बजे तक आवेदन कर सकते हैं। चार केंद्रों पर इतने पद इएटछ की भर्ती में केजीएफ कॉम्प्लेक्स के लिए सबसे अधिक 608 पद निर्धारित किए गए हैं। इसके अलावा बेंगलुरु में 400, मैसूर में 227

और पालक्काड में 111 पद हैं। अप्रेंटिस पदों में क्ळक, डिप्लोमा और ग्रेजुएट श्रेणियां शामिल हैं। क्ळक अभ्यर्थियों के लिए फिटर, टर्नर, मशीनिस्ट, वेल्डर, इलेक्ट्रिशियन और डीजल मैकेनिक जैसे ट्रेड में निर्धारित अवधि का पूर्णकालिक क्ळक प्रमाणपत्र आवश्यक है।

डिप्लोमा अप्रेंटिस के लिए मैकेनिकल, सिविल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स और कंप्यूटर साइंस सहित संबंधित विषयों में तीन वर्षीय पूर्णकालिक डिप्लोमा मांगा गया है। ग्रेजुएट अप्रेंटिस के लिए संबंधित इंजीनियरिंग शाखा में इ.ए./इ.ळीूँ के साथ इ.ट्र, इ.उङ्क, इउअ और इइअ जैसी योग्यताएं भी अधिसूचना में शामिल हैं।

न्यूनतम आयु 17 वर्ष

आवेदन करने वाले अभ्यर्थी की आयु 8 सितंबर 2026 को कम से कम 17 वर्ष होनी चाहिए। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और दिव्यांग अभ्यर्थियों को अधिकतम आयु सीमा में नियमानुसार छूट दी जाएगी। बिना परीक्षा और इंटरव्यू होगा चयन भर्ती प्रक्रिया में लिखित परीक्षा या साक्षात्कार आयोजित नहीं किया जाएगा। अभ्यर्थियों का चयन उनकी शैक्षणिक योग्यता और संबंधित दस्तावेजों के सत्यापन के आधार पर किया जाएगा। आवेदन के लिए किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाएगा।

कितना मिलेगा स्टाइपेंड?

चयनित अभ्यर्थियों को श्रेणी के अनुसार मासिक स्टाइपेंड दिया जाएगा। ग्रेजुएट अप्रेंटिस को ?12,300, डिप्लोमा अप्रेंटिस को ?10,900, जबकि क्ळक अप्रेंटिस को ट्रेड के अनुसार ?9,600 से ?10,560 तक प्रतिमाह स्टाइपेंड मिलेगा।

ऐसे करें आवेदन

क्ळक अभ्यर्थियों को आवेदन से पहले ठअढर पोर्टल पर तथा डिप्लोमा और डिग्री अभ्यर्थियों को ठअळर पोर्टल पर पंजीकरण करना होगा। इसके बाद इएटछ की आधिकारिक वेबसाइट के करियर सेक्शन में जाकर अस्त्रस्त्रशील्ल३ी फ्री१४३ेल्ल३ 2026 से संबंधित लिंक के माध्यम से आवेदन किया जा सकता है। अभ्यर्थियों को आवेदन फॉर्म में आवश्यक जानकारी भरने, दस्तावेज अपलोड करने और पसंदीदा मैन्युफैक्चरिंग कॉम्प्लेक्स का चयन करने के बाद आवेदन निर्धारित समय से पहले जमा करना होगा। आवेदन जमा करने के बाद उसका प्रिंटआउट या डिजिटल प्रति भविष्य के संदर्भ के लिए सुरक्षित रखना उपयोगी रहेगा।

अभ्यर्थियों को आवेदन करने से पहले इएटछ की आधिकारिक भर्ती अधिसूचना में अपनी शैक्षणिक योग्यता, ट्रेड, आयु सीमा और अन्य पात्रता शर्तों की पुष्टि कर लेनी चाहिए।

मालगाला में रक्तदान शिविर, युवाओं ने बढ़-चढ़कर लिया हिस्सा

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु। हक्का बुक्का क्षेमाअभिवृद्धि संघ की ओर से मालगाला में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए रक्तदान कर सामाजिक

GIVE BLOOD SAVE LIFE
DONATE BLOOD SAVE LIFE

जिम्मेदारी का परिचय दिया। शिविर के दौरान एकत्रित रक्त का संग्रहण बेंगलुरु रुधिर संस्थान द्वारा किया गया। आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित महेंद्र मुणोत ने रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रक्तदान जरूरतमंद मरीजों के जीवन को बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें प्रमाण पत्र वितरित किए। इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष रमेश ने महेंद्र मुणोत का सम्मान किया। आयोजकों ने रक्तदाताओं और शिविर को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। शिविर के माध्यम से युवाओं को नियमित रक्तदान के प्रति जागरूक करने और समाज में मानव सेवा की भावना को मजबूत करने का संदेश दिया गया।

आभार से बदले मन की दिशा, तनाव से मिले मुक्ति का मार्ग

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु। निर्यापक पूज्य मुनि श्री 108 वीरसागर जी महाराज ने ह्लआभार का भाव ऐसे उतरे हृदय मेंह्व विषय पर प्रेरणादायी प्रवचन देते हुए कहा कि मनुष्य के मानसिक तनाव और नकारात्मकता का कारण केवल बाहरी परिस्थितियां नहीं, बल्कि उन परिस्थितियों के प्रति उसकी मानसिक प्रतिक्रिया भी होती है। उन्होंने कहा कि बीती घटनाओं को बार-बार स्मरण करने से व्यक्ति स्वयं को मानसिक पीड़ा के चक्र में बांध लेता है।

मुनि श्री ने समझाया कि असफलता, अपमान, अस्वीकार या पुराने विवाद की घटना भले ही कुछ समय की हो, लेकिन उसका बार-बार चिंतन व्यक्ति को उसी पीड़ा का अनुभव कराता रहता है। ऐसे में वर्तमान

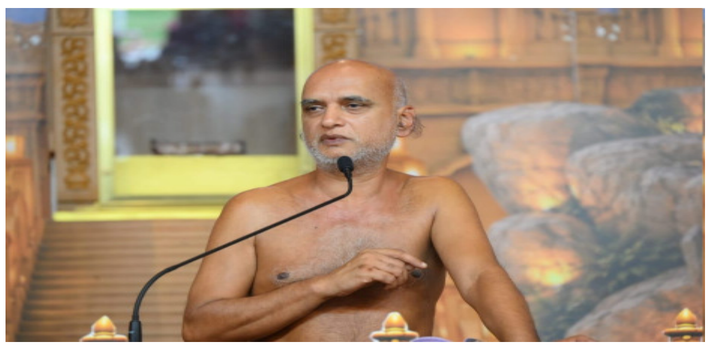

जीवन भी अतीत के बोझ से प्रभावित होने लगता है।

उन्होंने रेशम के कीड़े और मकड़ी का उदाहरण देते हुए कहा कि जिस प्रकार रेशम का कीड़ा अपने ही बनाए कोकून में और मकड़ी अपने ही बुने जाल में उलझ सकती है, उसी प्रकार मनुष्य भी अपने विचारों, पूर्वाग्रहों और अनियंत्रित भावनाओं के जाल में फंस जाता है। इसलिए विचारों की समीक्षा और भावनाओं के प्रति जागरूकता आवश्यक है।

मुनि श्री ने कहा कि ह्लचित्त को नदी के जल की तरह प्रवाहित रखेंह्व नदी का पानी लगातार बहता रहे तो निर्मल बना रहता है, जबकि ठहराव से उसमें विकार आने लगते हैं। इसी प्रकार जीवन में हुई घटनाओं को पकड़कर रखने के बजाय उन्हें स्वीकार कर आगे बढ़ना चाहिए। पुराने गिले-शिकवे और नकारात्मक स्मृतियों को लगातार दोहराना मन को बोझिल बनाता है।

प्रवचन के दौरान उन्होंने आभार और कृतज्ञता को मानसिक शुद्धि का प्रभावी माध्यम बताते हुए कहा कि शुरूआत में धन्यवाद व्यक्त करना औपचारिक लग सकता है, लेकिन नियमित अभ्यास से कृतज्ञता मनुष्य के स्वभाव का हिस्सा बन सकती है। उन्होंने शरीर के हृदय, फेफड़ों, आंखों और मस्तिष्क से लेकर प्रकृति, जल, वायु, परिवार तथा जीवन में सहयोग देने वाले प्रत्येक तत्व के प्रति आभार रखने की प्रेरणा दी।

मुनि श्री ने जैन दर्शन के ह्यअनर्थदण्डह्न सिद्धांत का उल्लेख करते हुए अनावश्यक विचार, निरर्थक वाणी और व्यर्थ कार्यों से बचने की सीख दी। उन्होंने कहा कि जब व्यक्ति अपने मानसिक उपभोग के प्रति सजग होकर आभार, स्वीकार और सकारात्मक चिंतन को जीवन में स्थान देता है, तब मन अधिक शांत, संतुलित और रचनात्मक बन सकता है।

उन्होंने कहा कि परिस्थितियां हमेशा मनुष्य के नियंत्रण में नहीं होतीं, लेकिन परिस्थितियों के प्रति उसकी दृष्टि और प्रतिक्रिया उसके अपने हाथ में होती है। आभार मन को हल्का करता है, स्वीकार भाव मानसिक बोझ कम करने में सहायक होता है और जागरूकता व्यक्ति को जीवन की सही दिशा चुनने की प्रेरणा देती है।

प्रवचन का मूल संदेश रहा कि मनुष्य बाहरी परिस्थितियों को हर बार नहीं बदल सकता, लेकिन अपनी दृष्टि, विचार और प्रतिक्रिया में परिवर्तन करके जीवन को अधिक सकारात्मक और संतुलित बना सकता है।

दैनिक समाचार पत्र
भारतार्थ खबर
ख़बर नहीं, उसका अर्थ
देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया

CJP कार्यक्रम में हंगामा, 11 हिरासत में

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

जोधपुर, 24 अगस्त 2026। जोधपुर स्थित गांधी शांति प्रतिष्ठान में रविवार को कॉकरोच जनता पार्टी (उखढ) के ह्यशिक्षा बचाओ, देश बचाओह्ण संवाद कार्यक्रम के दौरान हंगामे की स्थिति पैदा हो गई। पुलिस के अनुसार, कुछ युवक चारदीवारी फांदकर परिसर में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे थे। घटना के बाद पुलिस ने पूछताछ के लिए करीब 11 लोगों को हिरासत में लिया। कार्यक्रम में उखढ के सह-संयोजक एवं प्रवक्ता आशुतोष रांका युवाओं और विद्यार्थियों से शिक्षा तथा युवा मुद्दों पर संवाद कर रहे थे। इसी दौरान कुछ युवकों के परिसर में पहुंचने के बाद तनाव की स्थिति बनी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित किया और प्रदर्शन कर रहे युवाओं को वहां से हटाया।

पुलिस ने क्या कहा?

जोधपुर उ्ळढ (पूर्व) मनीष कुमार चौधरी के अनुसार, गांधी शांति प्रतिष्ठान में कार्यक्रम चल रहा था और कुछ लोगों ने बाउंड्री वॉल फांदकर परिसर में प्रवेश करने का प्रयास किया। पुलिस ने कुछ लोगों को हिरासत में लिया है। पुलिस अधिकारियों ने यह भी स्पष्ट किया कि कार्यक्रम के दौरान मारपीट या किसी अन्य अपराध के संबंध में उन्हें फिलहाल कोई औपचारिक शिकायत या सूचना प्राप्त नहीं हुई है। अधिकारियों के मुताबिक, शिकायत मिलने पर तथ्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

अइश्ढ और इख ट कार्यकर्ताओं पर आरोप

प्रत्यक्षदर्शियों के हवाले से सामने आई जानकारी के अनुसार, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अइश्ढ) और भारतीय जनता युवा मोर्चा (इख ट) से जुड़े कुछ कार्यकर्ताओं के कथित तौर पर चारदीवारी फांदकर कार्यक्रम स्थल में प्रवेश करने और नारेबाजी करने की बात कही गई है। हालांकि, इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है और पुलिस की ओर से किसी संगठन के कार्यकर्ताओं को घटना के लिए जिम्मेदार ठहराने की आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने हस्तक्षेप कर स्थिति को और बिगड़ने से रोकने का प्रयास किया। इलाके में सुरक्षा बढ़ाई गई घटना के बाद पुलिस ने क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी। अधिकारियों के अनुसार, पुलिसकर्मियों की मौजूदगी में विरोध कर रहे युवाओं को कार्यक्रम स्थल से हटाया गया, जिससे स्थिति सामान्य हो सके।

आयोजकों ने यह भी बताया कि गांधी शांति प्रतिष्ठान की घटना के बाद शास्त्री सर्कल गार्डन में छात्रों के साथ प्रस्तावित एक अन्य संवाद कार्यक्रम के लिए उखढ को अनुमति नहीं दी गई।

पहले भी सामने आया था विवाद

उखढ के संस्थापक एवं संयोजक अभिजीत दिपके ने इससे पहले आरोप लगाया था कि राजस्थान में आशुतोष रांका और उखढ के स्वयंसेवकों के साथ कथित तौर पर दुर्व्यवहार किया गया। उनके अनुसार, जयपुर जिले के रामपुर-कंवरपुरा में एक सरकारी स्कूल जाते समय कुछ लोगों ने टीम को रोककर कथित रूप से वहां से जाने को मजबूर किया। दिपके ने सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से राजस्थान पुलिस की भूमिका पर भी सवाल उठाए थे। हालांकि, इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि उपलब्ध जानकारी के आधार पर नहीं हुई है। फिलहाल जोधपुर पुलिस रविवार की घटना से जुड़े लोगों से पूछताछ कर रही है। पुलिस का कहना है कि औपचारिक शिकायत अथवा अन्य ठोस साक्ष्य सामने आने के बाद मामले में नियमानुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

रामराज्याभिषेक से भक्तिमय हुआ कथा पंडाल

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलूररु। 24 अगस्त 2026। श्री मातेश्वरी भक्त मंडल के तत्वावधान में होसूर भण्डे स्थित श्री कृष्णा गौ सेवा आश्रम गोशाला में आयोजित नौ दिवसीय श्रीराम कथा के छठे दिन सोमवार को रामराज्याभिषेक का प्रसंग श्रद्धा और उल्लास के साथ प्रस्तुत किया गया। कथा परिसर में अयोध्या धाम जैसा भक्तिमय वातावरण दिखाई दिया।

कथा व्यास संत किशोरचन्द रामायणी ने प्रभु श्रीराम के 14 वर्ष का वनवास पूर्ण कर माता सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटने तथा उनके राज्याभिषेक का प्रसंग भावपूर्ण ढंग से सुनाया। उन्होंने बताया कि प्रभु श्रीराम के अयोध्या लौटने पर पूरी नगरी में हर्ष और उत्सव का वातावरण छा गया। प्रजा ने दीप जलाकर अपने आराध्य का स्वागत किया, जिसके बाद विधि-विधान से श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ और रामराज्य की स्थापना का वर्णन किया गया।

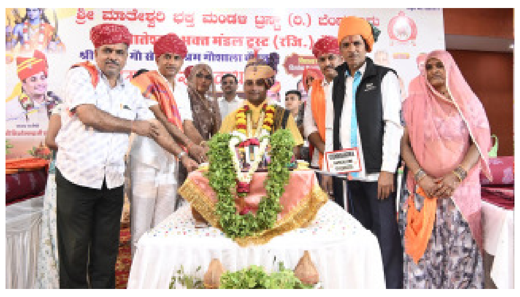

कथा प्रसंग को प्रभावी बनाने के लिए कलाकारों ने श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण के अयोध्या आगमन की जीवंत झांकी प्रस्तुत की। श्रीराम के स्वरूप के आगमन पर श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। राज्याभिषेक की झांकी ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। इस दौरान पंडाल में दीपावली जैसा उत्सवी माहौल रहा और श्रद्धालुओं ने जय श्रीराम के जयघोष किए।

संत किशोरचन्द रामायणी ने कहा कि रामराज्य में प्रजा सुखी और समृद्ध थी तथा अन्याय के लिए कोई स्थान नहीं था। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीराम का जीवन सत्य, मयार्दा, त्याग, सेवा और कर्तव्य का संदेश देता है। उनके आदर्शों को जीवन में अपनाने से परिवार और समाज में सुख, शांति तथा सद्भाव को बढ़ावा मिल सकता है। कथा के दौरान भजनों और जयघोषों से वातावरण लगातार भक्तिमय बना रहा। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने कथा का श्रवण कर रामराज्याभिषेक प्रसंग का आनंद लिया। कार्यक्रम के समापन पर आरती की गई तथा श्रद्धालुओं को महाप्रसादी वितरित की गई। आरती एवं महाप्रसादी के लाभार्थियों में सज्जयराम, ढलाराम, सुजाराम एवं किरण पंवार परिवार तथा ममता ग्रूप, मागडी रोड रहे।

जयपुर में भगवा रैली, पलायन के दावों पर उठी आवाज

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

जयपुर, 24 अगस्त 2026। राजस्थान की राजधानी जयपुर के परकोटा क्षेत्र में हिंदू परिवारों के कथित पलायन और धर्मांतरण के मुद्दे को लेकर युवा शक्ति मंच राजस्थान के नेतृत्व में सोमवार को भगवा आक्रोश रैली निकाली गई। रैली में संत-महंतों के अलावा बड़ी संख्या में महिलाएं, युवा और आम नागरिक शामिल हुए। आयोजकों ने पुराने जयपुर की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने तथा क्षेत्र से हिंदू परिवारों के कथित पलायन को रोकने की मांग उठाई।

रैली की शुरूआत खोले के हनुमान जी मंदिर में हनुमान चालीसा के पाठ के बाद हुई। जयपुर सांसद मंजू शर्मा, विधायक गोपाल शर्मा तथा जगद्गुरु रामभद्राचार्य के उत्तराधिकारी रामचंद्रदास महाराज ने भगवा झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। रैली के दौरान मार्ग में भगवा ध्वज दिखाई दिए और प्रतिभागियों ने जय श्रीराम के नारे लगाए।

पलायन और कथित धर्मांतरण का मुद्दा

युवा शक्ति मंच के प्रदेश अध्यक्ष सुनील सिंह शेखावत ने दावा किया कि संगठन पिछले 13 वर्षों से सामाजिक जागरूकता के लिए कार्य कर रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि परकोटा क्षेत्र के कुछ हिस्सों में हिंदू परिवार अपने मकान बेचकर अन्य स्थानों पर जा रहे हैं।

शेखावत ने रामगंज क्षेत्र का उल्लेख करते हुए वहां हिंदू परिवारों के मकान बेचकर जाने के मामले सामने आने का दावा किया। उन्होंने कथित धर्मांतरण को लेकर भी चिंता जताई और इसे पुराने शहरों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना से जुड़ा गंभीर विषय बताया।

हालांकि, हिंदू परिवारों के कथित पलायन और धर्मांतरण से जुड़े ये आंकड़े एवं दावे रैली के आयोजकों की ओर से किए गए हैं। इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि इस रिपोर्ट में उपलब्ध नहीं है। महिलाओं और युवाओं की बड़ी भागीदारी

किसानों का हाईवे जाम, सरकार को चेतावनी

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

लातूर, 24 अगस्त 2026। महाराष्ट्र के लातूर जिले में किसानों ने विभिन्न मांगों को लेकर रविवार को हैदराबाद-लातूर राजमार्ग के एक हिस्से को करीब दो घंटे तक अवरुद्ध कर विरोध प्रदर्शन किया। लामजना गांव में क्रांतिकारी शेतकरी संगठन के बैनर तले हुए प्रदर्शन में किसानों ने राज्य सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और तत्काल राहत की मांग उठाई।

प्रदर्शन का नेतृत्व क्रांतिकारी शेतकरी संगठन की महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष राजीव कसबे ने किया। किसानों का कहना है कि कम बारिश, कृषि उपज के अपेक्षाकृत कम दाम, बढ़ती उत्पादन लागत और कृषि ऋण के दबाव ने उनकी आर्थिक परेशानियां बढ़ा दी हैं।

दो लाख रुपये प्रोत्साहन राशि की मांग

प्रदर्शनकारी किसानों ने नियमित रूप से कृषि ऋण चुकाने वाले किसानों को दो लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि देने की मांग की। किसानों का कहना है कि जो किसान समय पर अपना कर्ज चुकाते रहे हैं, उन्हें मौजूदा कृषि संकट के बीच सरकार की ओर से आर्थिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

इसके साथ ही किसान संगठन ने मराठवाड़ा क्षेत्र में बारिश की कमी को देखते हुए तत्काल सूखा घोषित करने और प्रभावित किसानों को 50 हजार रुपये प्रति किसान मुआवजा देने की मांग रखी है। संगठन के अनुसार, बारिश की कमी से खरीफ फसल पर प्रतिकूल असर पड़ने की आशंका है।

आंदोलन तेज करने की चेतावनी

प्रदर्शन के दौरान किसानों ने सरकार से उनकी मांगों पर शीघ्र निर्णय लेने की अपील की। संगठन के नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि मांगों पर सकारात्मक कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलन को महाराष्ट्र के अन्य हिस्सों तक ले जाया जाएगा।

राजीव कसबे ने कहा कि किसान ईमानदारी से अपना कृषि ऋण चुकाते हैं और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद खेती जारी रखते हैं। उन्होंने सरकार से नियमित ऋण चुकाने वाले किसानों को दो लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि देने की मांग दोहराई।

प्रदर्शनकारियों ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि किसानों के धैर्य की परीक्षा नहीं ली जानी चाहिए। उन्होंने आंदोलन व्यापक करने की बात कही। किसानों के इस बयान को आंदोलन की चेतावनी के रूप में देखा जा रहा है। प्रदर्शन के कारण राजमार्ग पर कुछ समय के लिए यातायात प्रभावित हुआ। किसानों ने अपनी मांगों को सरकार तक पहुंचाने के लिए सड़क पर उतरकर विरोध दर्ज कराया।

अडानी-शिवकुमार मुलाकात पर सियासी घमासान, भाजपा ने उठाए सवाल

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु। उद्योगपति गौतम अडानी ने रविवार को कर्नाटक के मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार से मुलाकात की। दोनों की यह मुलाकात ऐसे समय हुई है, जब बेंगलुरु की प्रस्तावित हेब्बाल-सिल्क बोर्ड 17 किलोमीटर लंबी सुरंग सड़क परियोजना को लेकर सरकार के स्तर पर प्रक्रिया आगे बढ़ाने की चर्चा चल रही है। मुलाकात के बाद भाजपा ने कांग्रेस पर कथित दोहरे रवैये को लेकर निशाना साधा है।

मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने मुलाकात को शिष्टाचार भेंट बताया। उन्होंने कहा कि अडानी समूह के कर्नाटक में कारोबारी हित हैं। मुलाकात के दौरान प्रस्तावित सुरंग परियोजना से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होने की संभावना जताई गई है, हालांकि बैठक में किन विषयों पर विस्तृत बातचीत हुई, इसकी आधिकारिक जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है।

17,698 करोड़ की परियोजना पर नजर

राज्य सरकार के अनुमान के अनुसार, हेब्बल से सिल्क बोर्ड तक प्रस्तावित सुरंग सड़क परियोजना की लागत करीब ?17,698 करोड़ है। सरकार का तर्क है कि बेंगलुरु के अत्यधिक व्यस्त मार्गों पर यातायात का दबाव कम करने के लिए भूमिगत कॉरिडोर विकसित करना जरूरी है।

परियोजना के लिए अडानी एंटरप्राइजेज सबसे कम बोली लगाने वाली कंपनी के रूप में सामने आई थी। हालांकि, उपलब्ध जानकारी के अनुसार उसकी बोली सरकार के अनुमानित परियोजना खर्च से करीब ?4,600 करोड़ अधिक बताई गई है। इसी कारण प्रस्ताव को आगे बढ़ाने से पहले मंत्रिमंडल की मंजूरी समेत अन्य प्रक्रियाओं पर विचार किया जा रहा है।

परियोजना को बेंगलुरु स्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (इ-स्टक्छए) के माध्यम से दो पैकेज में विकसित करने की योजना बताई गई है।

परियोजना पर भाजपा और नागरिक समूहों के सवाल

प्रस्तावित सुरंग सड़क को लेकर भाजपा के साथ कुछ नागरिक समूह भी सवाल उठा रहे हैं। आलोचकों ने परियोजना की उपयोगिता, आर्थिक व्यवहार्यता और इसके निर्माण के बाद वाहन चालकों पर पड़ने वाले संभावित टोल भार को लेकर चिंता व्यक्त की है।

भाजपा नेता आर. अशोक ने अडानी और मुख्यमंत्री की मुलाकात को लेकर कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस के केंद्रीय नेतृत्व की ओर से अडानी समूह की आलोचना की जाती रही है, जबकि कर्नाटक में उसी समूह के साथ सरकार की नजदीकी दिखाई दे रही है। भाजपा ने इसे कांग्रेस के कथित दोहरे मापदंड से जोड़ते हुए सरकार से परियोजना की पारदर्शिता पर स्पष्टीकरण मांगा है।

सिंहेश्वर मंदिर में भगदड़, कई श्रद्धालु घायल

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

मधेपुरा, 24 अगस्त 2026। बिहार के मधेपुरा स्थित प्रसिद्ध बाबा सिंहेश्वर नाथ मंदिर में सावन की अंतिम सोमवारी पर भारी भीड़ के बीच बैरिकेडिंग टूटने से कुछ देर के लिए भगदड़ जैसी स्थिति पैदा हो गई। जलाभिषेक के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने से भीड़ का दबाव बढ़ गया, जिसके चलते कई महिला और बुजुर्ग श्रद्धालु गिरकर घायल हो गए। भीड़ नियंत्रित करने के दौरान ड्यूटी पर तैनात एक पुलिसकर्मी के घायल होने और उसकी वर्दी फटने की भी जानकारी सामने आई है।

घायलों को तत्काल जननायक कपूरी ठाकुर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल (JNKTMCH) पहुंचाया गया, जहां उनका उपचार किया गया।

सुबह आठ बजे बढ़ा भीड़ का दबाव

जानकारी के अनुसार, अंतिम सोमवारी को देखते हुए रविवार देर रात करीब एक बजे सरकारी पूजा पूरी होने के बाद मंदिर के कपाट आम श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए थे। रात से ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु कतार में खड़े थे। सोमवार सुबह करीब आठ बजे श्रद्धालुओं की संख्या अचानक बढ़ गई। जलाभिषेक के लिए आगे बढ़ने की होड़ में कतार में धक्का-मुक्की शुरू हुई और सुरक्षा के लिए लगाई गई लोहे एवं बांस की बैरिकेडिंग टूट गई।

एक-दूसरे पर गिरे श्रद्धालु

बैरिकेडिंग टूटने के बाद पीछे से आ रही भीड़ के दबाव में कुछ श्रद्धालु एक-दूसरे के ऊपर गिर गए। मौके पर मौजूद सुरक्षाकर्मियों और मंदिर स्वयंसेवकों ने तत्काल बचाव कार्य शुरू किया और नीचे दबे लोगों को बाहर निकाला।

घायलों को एंबुलेंस के जरिए अस्पताल भेजा गया। प्रशासन की त्वरित कार्रवाई से स्थिति को और गंभीर होने से रोक लिया गया।

उद्ब-रढ ने संभाला मोर्चा

घटना की सूचना मिलते ही मधेपुरा के जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक सहित एसडीएम एवं एसडीपीओ मौके पर पहुंचे। अधिकारियों ने सुरक्षा व्यवस्था की निगरानी करते हुए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कराया और भीड़ को नियंत्रित कर श्रद्धालुओं को दोबारा व्यवस्थित कतार में खड़ा कराया।

गणपति जुलूस पर अंडे फेंकने का आरोप, मझगांव में तनाव

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

मुंबई, 24 अगस्त 2026। मुंबई के मझगांव इलाके में भगवान गणेश की प्रतिमा के आगमन जुलूस के दौरान कथित तौर पर अंडे फेंके जाने को लेकर तनाव की स्थिति पैदा हो गई। घटना के बाद कुछ समय के लिए दोनों पक्षों में विवाद और झड़प की स्थिति बनी। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और हालात को नियंत्रित किया। जानकारी के अनुसार, ह्यमाझगांवचा मोरयाह्ण गणपति की आगमन यात्रा के दौरान कथित रूप से एक इमारत से जुलूस में शामिल लोगों और गणेश प्रतिमा की ओर अंडे फेंके गए। इससे जुलूस में शामिल लोगों में नाराजगी फैल गई और मौके पर तनाव बढ़ गया।

सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही पुलिस

घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर स्थिति संभाली। पुलिस अब जुलूस मार्ग के आसपास स्थित इमारतों में लगे सीसीटीवी कैमरों की रिकॉर्डिंग की जांच कर रही है। फुटेज के आधार पर अंडे फेंकने वाले संदिग्धों की पहचान करने का प्रयास किया जा रहा है।

घटना से नाराज कुछ लोगों की पुलिस अधिकारियों के साथ बहस भी हुई। पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित करने के साथ ही मामले की जांच शुरू कर दी है।

सख्त कार्रवाई की मांग

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, गणपति मंडल के डिप्टी सेक्रेटरी विवेक राणे ने बताया कि आगमन यात्रा के दौरान पंडाल से करीब 30 से 40 मीटर दूर स्थित एक इमारत से कथित तौर पर जुलूस पर अंडे फेंके गए। उन्होंने घटना को आपत्तिजनक बताते हुए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।

कथित अंडे फेंके जाने की घटना के बाद दोनों पक्षों के बीच विवाद बढ़ने की बात सामने आई है। पुलिस के हस्तक्षेप के बाद स्थिति को नियंत्रित किया गया। फिलहाल पुलिस सीसीटीवी फुटेज और उपलब्ध जानकारी के आधार पर पूरे घटनाक्रम की जांच कर रही है। किसी व्यक्ति की भूमिका की आधिकारिक पुष्टि या गिरफ्तारी की जानकारी पुलिस की जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट होगी।

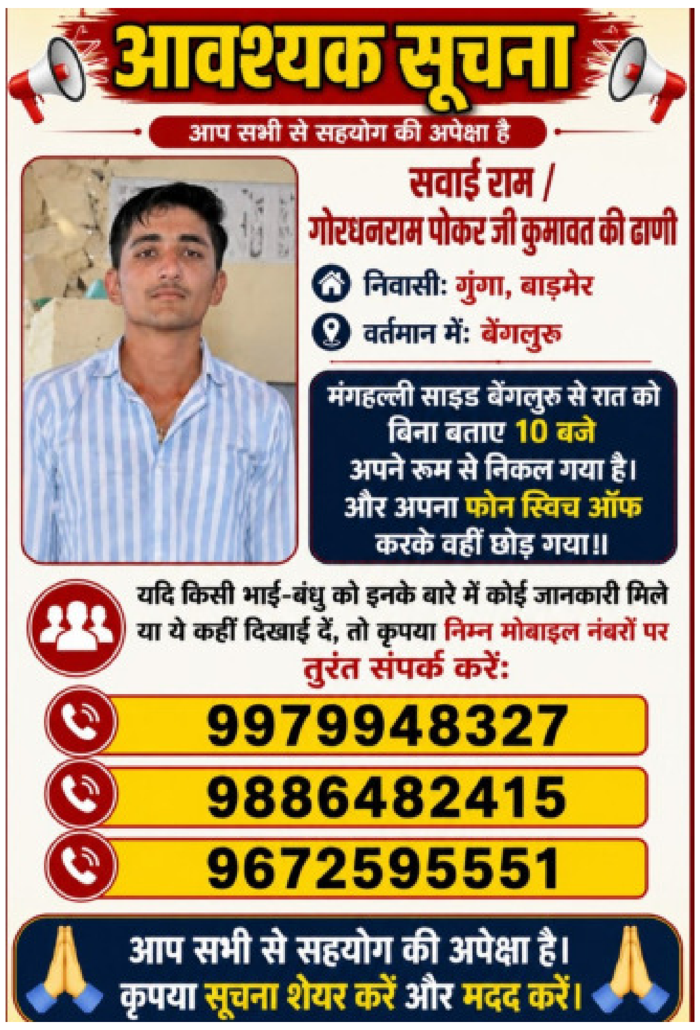

आवश्यक सूचना
आप सभी से सहयोग की अपेक्षा है
सवाई राम /
गोरधनराम पोकर जी कुमावत की ढाणी
निवासी: गुंगा, बाड़मेर
वर्तमान में: बेंगलुरु
मंगहल्ली साइड बेंगलुरु से रात को बिना बताए 10 बजे अपने रूम से निकल गया है। और अपना फोन स्विच ऑफ करके वहीं छोड़ गया!!
यदि किसी भाई-बंधु को इनके बारे में कोई जानकारी मिले या ये कहीं दिखाई दें, तो कृपया निम्न मोबाइल नंबरों पर तुरंत संपर्क करें:
☎ 9979948327
☎ 9886482415
☎ 9672595551
आप सभी से सहयोग की अपेक्षा है।
कृपया सूचना शेयर करें और मदद करें।

कर्नाटक में H1N1 के 4,212 मामले, स्वास्थ्य विभाग अलर्ट

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु। कर्नाटक में मौसमी इन्फ्लूएंजा (त्न1ठ1) के मामलों में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। स्वास्थ्य विभाग के एकीकृत स्वास्थ्य सूचना मंच (क्लक्ढ) के आंकड़ों के अनुसार, 22 अगस्त 2026 तक राज्य के 32 जिलों में त्न1ठ1 के 4,212 प्रयोगशाला-पुष्ट मामले सामने आए हैं। स्वास्थ्य मंत्री यू.टी. खादर ने उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक के बाद लोगों से सतर्क रहने की अपील करते हुए कहा कि फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है और घबराने की आवश्यकता नहीं है।

बेंगलुरु में सबसे अधिक मामले

स्वास्थ्य विभाग के आंकड़ों के मुताबिक, सबसे अधिक मामले ग्रेटर बेंगलुरु क्षेत्र और बेंगलुरु शहरी जिले में दर्ज किए गए हैं। ग्रेटर बेंगलुरु क्षेत्र में 2,070, बेंगलुरु शहरी में 1,011 और उडुपी में 300 मामले सामने आए हैं। मंत्री के अनुसार, वर्तमान में करीब 300 से 400 सक्रिय मामले हैं और अधिकांश मरीज घर पर उपचार लेकर स्वस्थ हो रहे हैं। बेंगलुरु में घनी आबादी और भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों को संक्रमण के अधिक प्रसार का प्रमुख कारण माना जा रहा है।

मानसून में बढ़ना मौसमी प्रवृत्ति

स्वास्थ्य विभाग ने स्पष्ट किया है कि मामलों में वृद्धि को फिलहाल किसी असामान्य प्रकोप के रूप में नहीं देखा जा रहा है। विभाग के अनुसार, कर्नाटक में इन्फ्लूएंजा के मामले सामान्यतः दो प्रमुख मौसमी अवधियों–जनवरी से मार्च तथा जुलाई से सितंबर–के दौरान बढ़ते हैं। आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2025 में राज्य में त्न1ठ1 के 4,583 मामले, जबकि 2024 में 3,903 मामले दर्ज किए गए थे। इस लिहाज से वर्ष 2026 में अब तक सामने आए मामले मौसमी संक्रमण के पैटर्न के अनुरूप बताए जा रहे हैं।

अस्पतालों में दवाओं और सुरक्षा सामग्री का स्टॉक स्वास्थ्य विभाग ने संभावित संक्रमण से निपटने के लिए सरकारी अस्पतालों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में ठ95 मास्क, पीपीई किट और एंटीवायरल दवा ओसेल्टामिविर का पर्याप्त स्टॉक रखने की व्यवस्था की है। निजी अस्पतालों को मरीजों की स्क्रीनिंग और क्लक्ढ पोर्टल पर मामलों की अनिवार्य रिपोर्टिंग के निर्देश दिए गए हैं।

इसके अलावा, होटल और रेस्तरां संचालकों को ग्राहकों को उबला या गर्म पानी उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए हैं।

लक्षण दिखने पर सावधानी बरतने की अपील

स्वास्थ्य विभाग ने लोगों से बुखार, जुकाम या खांसी जैसे फ्लू के लक्षण दिखाई देने पर सार्वजनिक स्थानों पर जाने से बचने और आवश्यकता पड़ने पर मास्क का इस्तेमाल करने की अपील की है। लक्षण होने पर कुछ समय घर पर रहना, नियमित रूप से हाथ धोना, पर्याप्त मात्रा में पानी पीना और चिकित्सकीय सलाह के अनुसार ही दवा लेना उचित बताया गया है।

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि राज्य में त्न1ठ1 से किसी मौत की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। स्कूल-कॉलेजों के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश भी जारी किए जाने की बात कही गई है।

यूपी चुनाव से पहले आरक्षण पर सियासी घमासान

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

लखनऊ, 24 अगस्त 2026। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से कुछ महीने पहले आरक्षण व्यवस्था में सुधार की मांग को लेकर दिल्ली में हुए प्रदर्शन ने सियासी हलचल बढ़ा दी है। रविवार को कनॉट प्लेस में बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी जुटे और आरक्षण नीति में बदलाव, आर्थिक मानदंडों को अधिक महत्व देने तथा मौजूदा व्यवस्था की समीक्षा की मांग उठाई। प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने कई लोगों को हिरासत में लिया।

इस आंदोलन को लेकर राजनीतिक दलों में भी प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं। हालांकि, आगामी चुनाव में इसका भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर कितना असर पड़ेगा, यह अभी कहना जल्दबाजी होगी। फिलहाल प्रदर्शन और इससे जुड़ी राजनीतिक प्रतिक्रियाओं ने आरक्षण के मुद्दे को चुनावी चर्चा के केंद्र में ला दिया है।

क्या हैं प्रदर्शनकारियों की मांगें?

कनॉट प्लेस में प्रदर्शनकारियों के हाथों में आरक्षण व्यवस्था में सुधार की मांग वाली तख्तियां थीं। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि सरकारी सहायता और अवसरों के लिए आर्थिक स्थिति को भी महत्वपूर्ण आधार बनाया जाना चाहिए।

प्रमुख मांगों में क्रीमी लेयर के नियम को प्रभावी बनाने, मौजूदा आरक्षण व्यवस्था की समीक्षा तथा शिक्षा और रोजगार से जुड़ी नीतियों में बदलाव शामिल हैं। प्रदर्शनकारियों ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (वऋ्र) के ढांचे और अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम से जुड़े प्रावधानों पर भी पुनर्विचार की मांग उठाई। एक प्रदर्शनकारी ने कहा कि उनका विरोध आरक्षण के सिद्धांत से नहीं, बल्कि उसकी मौजूदा व्यवस्था में सुधार की जरूरत को लेकर है। उनका तर्क है कि आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की समस्याओं को जाति से अलग भी देखा जाना चाहिए।

यूपी सरकार ने बातचीत का संकेत दिया

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने जंतर-मंतर पर प्रस्तावित आरक्षण सुधार आंदोलन के प्रतिनिधियों से बातचीत की। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनकारी युवाओं की मांगों को केंद्रीय नेतृत्व के सामने रखा जाएगा और प्रतिनिधिमंडल की केंद्रीय मंत्री के साथ बैठक कराने का प्रयास किया जाएगा।

पाठक ने कहा कि आंदोलन से संबंधित पत्र केंद्रीय नेतृत्व को सौंप दिया गया है और युवाओं की मांगों पर गंभीरता से विचार किए जाने का आश्वासन मिला है।

ठऊ्अ में भी आरक्षण पर अलग-अलग राय

आरक्षण के मुद्दे पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (ठऊ्अ) के भीतर भी अलग-अलग रुख सामने आए हैं। राष्ट्रीय लोक मोर्चा प्रमुख एवं राज्यसभा सांसद उपेंद्र कुशवाहा ने बिहार में पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण बढ़ाकर 65 प्रतिशत किए जाने की मांग का उल्लेख किया है।

वहीं, केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान आरक्षण की समीक्षा के विचार का विरोध कर चुके हैं। उन्होंने कहा है कि सरकार प्रदर्शनकारियों से बातचीत के लिए तैयार है और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण पहले से मौजूद है। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री रामदास आठवले ने आरक्षण को संवैधानिक अधिकार बताते हुए इसे समाप्त करने की मांग का विरोध किया है।

Printed Published & Owner by Dhanna Ram Choudhary And Printed at MNS Printers Pvt. Ltd., No.345/4, Bhattarahalli, Old Madras Road, Bengaluru Karnataka-560049. And Published at ''Maruthi“Plaza''“, No. 10/1, 1st Cross Road, 3rd Floor , Oil Mill Road, Arvind Nagar , Maruthi Seva Nagar Post, Kammanahalli, Bengaluru Urban, Karnataka -560033, Editor Dhanna Ram Choudhary , For Editorial 91641 17755, Advertisement 88676 89130 , RNI No. KNHIN/2026/A5540. E-Mail: news@bhaarataarth.com, Website: bhaarataarth.com, Established: 2026